पाठ - 1 बीरबहूटी (कहानी) कार्यपत्रिका – उत्तर सूचिका

सूचना – 1

1. आगे भी वर्षा होगी।
2. हवाएँ इधर-उधर घूमेंगी।
3. बाजरे के **लंबे-पतले** पातों में बूँदें अटकी हुई थीं ।
   बाजरे के लंबे-पतले पातों में **पानी की** बूँदें अटकी हुई थीं ।
4. **सही मिलान**

उन्हें बीरबहूटियों से मिलना था	- वे घर से कुछ समय पहले निकले।
बारिश की हवा में	- हरियाली की गंध घुली हुई थी।
बच्चा बहुत नज़दीक रहकर	- बीरबहूटियाँ खोजते थे।
बादल बहुत बरस लिए थे	- फिर भी उनमें पानी बचा हुआ था।

सूचना – 2

1. साहिल को
2. भरी गयी थी।
3. स्कूल की **पहली** घंटी अभी लग गई है।
   स्कूल की पहली घंटी अभी **ज़ोर से** लग गई है।
4. **वार्तालाप को आगे बढाएँ ।**

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला
बेला - हाँ सुना। पहली घंटी लग गई है।
साहिल - लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भरवानी है।
बेला -तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाया तो ?
साहिल - ऐसा नहीं होगा यार, स्कूल के नज़दीक के दुकान से ही भरवानी है।
बेला -क्या, कलम में स्याही बिलकुल नहीं है ?
साहिल - कुछ स्याही थी, पर मैंने उसे ज़मीन पर छिडक दिया।
बेला -ऐसा क्यों किया तूने ?
साहिल - नई स्याही भरवाने केलिए पैन को खाली किया।
बेला -दुकान में स्याही नहीं है तो ?
साहिल - दुकान में स्याही ज़रूर होगा।
बेला -तो जल्दी चलो।
साहिल - ठीक है।

सूचना – 3

1. साहिल और बेला
2. बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में
3. **बेला की डायरी (बीरबहूटी की खोज)**

> तारीख: ………………
> स्कूल केलिए निकली। साहिल के साथ। खेत गई। बस्ते पीठ पर लदे थे। ज़मीन पर बैठ गए। खेत में बीरबहूटियों को खोजने लगे। कुछ दिखाई भी दिए। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती – फिरती खून की प्यारी – प्यारी बूँदें। स्कूल की पहली घंटी लग गई। साहिल को पैन में स्याही भरवानी थी। दुकान की ओर चले।

अथवा

बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी। वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है। उसका दोस्त है साहिल। दोनों अच्छे दोस्त हैं,वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढते थे। साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं,रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं। बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है। एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है। पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर दोनों अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं। बेला में हम एक सरस स्वभाववाली,मित्रता निभानेवाली,स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं।

HSSLiVE.IN
SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

सूचना – 4

1. बीरबहूटियों से मिलने केलिए
2. बस्ता पीठ पर लदा हुआ था ।
3. **पटकथा**

स्थान – कस्बे से सटा खेत ।

समय – सुबह 9 बजे ।

पात्र - साहिल और बेला(दोनों 10-11 साल के, स्कूल की वर्दी पहने हैं ।)

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे,स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं ।

संवाद -

बेला – देखो साहिल,यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा । इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है ।

बेला - ठीक है। ये कितने सुर्ख,मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ....।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना,स्कूल में पहली घंटी लग गई है । जल्दी चलो , देर हो जाएगी ।

साहिल – रुको,दुकान से मुझे पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला,स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है ।

बेला - तो चलो जल्दी ।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं ।)

सूचना – 5

1. एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर
2. **साहिल का पत्र (बीरबहूटियों की विशेषताएँ)**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

हमारे इलाके में अब बारिश का मौसम चल रहा है । कस्बे से सटे सारे खेत बीरबहूटियों से भर गए हैं । स्कूल में आते-जाते समय मैं अपनी सहेली बेला के साथ मिलकर उन्हें खोजते हैं । तुमने कभी सुना है बीरबहूटियों के बारे में ? ये बहुत सुर्ख,मुलायम और गदबदी हैं । उन्हें देखकर धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें जैसे लगती हैं । सचमुच उन्हें इस तरह लाल रिबन जैसे कतार में खडे होते देखकर मन प्रसन्न हो जाता है । उन्हें खोजते रहने पर समय काट जाने का कोई अंदाज़ नहीं होगा । रविवार की छुट्टी में तुम यहाँ आना,हम साथ मिलकर उन्हें खोज लेंगे । तब तुम्हें पता चलेगा ये कितने मनमोहक हैं ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

सूचना – 6

1. पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
2. दुकान की स्याही की बोतल खाली हो गई है ।
3. साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी । तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा। कहने का मतलब है- किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है । बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।

4.**पटकथा**

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।

समय - सुबह 10 बजे ।

पात्र - साहिल,बेला और दुकानदार ।

(स्कूल वर्दी पहने 10 साल के दो बच्चे । दुकानदार , 50 साल के आदमी,धोती और कुर्ता पहने हैं ।)

दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

संवाद –

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?
बेला - अंकिल, एक पैन में स्याही भर दो ।
दुकानदार - क्या करूँ बेटी ? स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।
बेला - लेकिन इसने तो पैन में बची स्याही को भी ज़मीन पर छिडक दिया ।
दुकानदार - (हँसते हुए) बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए । अच्छा कौन-सी कक्षा में पढती हो ?
साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।
दुकानदार - दोनों ?
बेला - (खुशी से) हाँ अंकिल । हम दोनों सेक्शन ए में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।
दुकानदार - तो कल आओ बच्चे । स्याही ज़रूर मिलेगी ।
बेला - ठीक है अंकिल । (चलते हुए) साहिल अब हम क्या करेंगे ?
साहिल - चलो, किसीसे उधार लेंगे ।
(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

सूचना – 7

1. पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया ।
2. पाँच पैसे में **नीली** स्याही भरी जाती थी ।
   पैन में पाँच पैसे में नीली स्याही भरी जाती थी ।
3. **साहिल की डायरी**

तारीख: ……………….
खेत में बीरबहूटियों को देख रहा था । बेला भी थी । स्कूल की पहली घंटी बजी । पैन में थोडी स्याही थी उसे ज़मीन पर छिडक दिया । स्याही भरवाने दुकान गए । दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । बहुत निराश हुए । ‘ बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ’ दुकानदार का उपदेश भी सुना । ठीक है, बिना विचारे कुछ भी नहीं करना है ।

सूचना – 8

1. सोच-विचार करके काम लेना चाहिए ।
2. भर दीजिए ।
3. दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा ।
4. **बेला की डायरी (पैन में स्याही)**

तारीख: ……………….
खेत में बीरबहूटियों को देख रही थी । साहिल भी थी । स्कूल की पहली घंटी बजी । साहिल के पैन में थोडी स्याही थी उसने उसे ज़मीन पर छिडक दिया । स्याही भरवाने दुकान गए । दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । बहुत निराश हुए । ‘ बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ’ दुकानदार का उपदेश भी सुना । कितना नटखट है यह साहिल ।

सूचना – 9

1. साहिल के सामने पीट जाने से
2. बेला के पाँव काँप गए ।
3. **बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में**

तारीख: …………………..
आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ, अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

सूचना – 10

1. बेला के भयभीत चेहरे को देखकर
2. साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।
3. अब तक साहिल बेला को एक अच्छी लडकी मानता था । उसके सामने अपमानित होने से बेला के मन में उसके प्रति ऐसे विचार आए होंगे कि वह ज़रूर उसे बुरा माना होगा । साहिल भी बहुत डर गया होगा । उससे कैसे नज़र मिलाए ? कैसे बात करे ? उसके पास कैसे जाकर बैठे ?

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

8. **साहिल की डायरी**

तारीख: ………………..

आज मेरेलिए कैसा दिन था,बता नहीं सकता।गणित के माटसाब क्लास में आए । हम सब भयभीत रहे। वे कॉपी जाँचने लगे । अचानक उन्होंने कॉपी में कोई गलती पाकर बेला के बालों में पंजा फँसाया । गलती न होने से उसे छोड दिया । उसकी भयभीत चेहरा देखकर मैं भी बुरी तरह डर गया । बेला के पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि वह अभी गिर जाएगी । उसे बहुत शरम आया था । मेरे पास आकर बैठने पर वह मुझे नज़र नहीं मिला न सकी । पूरे दिन वह उदास रही । यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ?

अथवा

पटकथा (खेल घंटी बंद होने से पहले कक्षा में जाने की बात साहिल से बेला कहती है)

HSSLiVE.IN

स्थान – स्कूल से घर जाने का रास्ता ।

समय – सुबह के 10 बजे ।

पात्र – साहिल और बेला दोनों 11 साल के, यूनीफॉर्म पहने हैं ।

घटना का विवरण – खेल घंटी में लंगडी टाँग खेलते रहने पर साहिल बेला को याद कराती है कि घंटी बजाने का समय होनेवाला है, अगला पीरियड सुरेंदर जी का है इसलिए उन्हें जल्दी जाना है । वे इसके बारे में आपस में बातें करने लगे ।

संवाद –

साहिल - अरे बेला, घंटी बजने का समय हो गया है । पता है न अगला पीरीयड किसका है ?

बेला – हाँ, अब केवल 5 मिनेट ही है ।

साहिल - तो चलो, हाथ-मुँह धोकर जल्दी क्लास में जाकर बैठें ।

बेला – जूता पहनकर मैं आती हूँ । क्या तूने गृहकार्य पूरा किया ?

साहिल - हाँ किया । तूने ?

बेला – मैंने कल ही किया था ।

साहिल - हमारे गणित के माटसाब कितना क्रूर है । किसीसे प्यार नहीं ।

बेला – ठीक कहा तूने । ज़रा-सी गलती पर भी कठिन दंड देते हैं । यह भी नहीं सोचते कि हम छोटे बच्चे हैं ।

साहिल - हे भगवान, मेरी कॉपी में कोई गलती न हो !

बेला – मैं भी यही प्रार्थना में हूँ ।

साहिल - बेला छुप हो जाओ, वे आ रहे हैं ।

(माटसाब क्लास में प्रवेश करते हैं । बच्चे भयभीत होकर बैठ जाते हैं ।)

सूचना – 11

1. साहिल के सामने बेला लज्जित होना नहीं चाहती ।
2. माटसाब कॉपी जाँचेंगे ।
3. छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।
4. **वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)**

साहिल - बेला, तुम दुखी है क्या ?

बेला - कुछ नहीं ।

साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं ।

बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी । फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।

साहिल - हाँ, वे भी जानते थे । इसलिए तुम्हें छोड दिया ।

बेला - मैं सचमुच डर गई थी ।

साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था ।

बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी ।

साहिल - मैं तुम्हें देख रहा था ।

बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ … सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे … पर ।

साहिल - तुम इस घटना को भूलो ।

बेला - पर … मैं दुख सह न पाती । घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी ।

साहिल - ज़रूर बताना । अब खुशी से घर जाओ ।

बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी ।

SREEHARI R KOVOOR VARKALA, SCRIPS ph 9567124545

अथवा

रपट

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थान: ……….. फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता की। कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा। लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया। उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी। छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं। कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं। कॉपी में ज़रा -सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी। बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज़ की है।

सूचना – 12

1. खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था।
2. उसकी कॉपी में गलती न होने से
3. **बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का ज़िक्र करते हुए सहेली के नाम**

स्थान : ………………

तारीख : ………………

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ।

आज स्कूल में एक घटना हुई। तीसरी पिरीयड गणित का था। गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे। आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे। तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया। लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी। उन्होंने मुझे छोड दिया। मैं डर से काँप रही थी। उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी। फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया। तुम जानती हो,वे कितने क्रूर हैं उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्या पक है क्या ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना ।

जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,

नाम

पता।

अथवा

चरित्र चित्रण-गणित के माटसाब सुरेंदरजी का

सुरेदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे। स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे। इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे। वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे। ज़रा-सी गलती पर भी झापड मारना,बालों में पंजा फँसाना,कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं। भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे। छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी। बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी। बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे।

सूचना – 13

1. बोलना पडा।
2. बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है। उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी। लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी। इसलिए उसे शरम आया।
3. **पटकथा**

स्थान - गली का रास्ता।

समय - शाम 4 बजे।

पात्र - साहिल और बेला। (दोनों 11 साल के,यूनीफॉर्म पहने हैं।)

घटना का विवरण - घर जाते समय बेला को दुखी देखकर उसको सांत्वना देते हुए साहिल उससे बातें करने लगता है।

संवाद –

साहिल - बेला, तुम दुखी है क्या ?

बेला - कुछ नहीं।

साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं।

बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी। फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

साहिल - हाँ, वे भी जानते थे। इसलिए तुम्हें छोड दिया।

बेला - मैं सचमुच डर गई थी।

साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था।

बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे। मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी।

साहिल - मैं तुम्हें देख रहा था।

बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ ... सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे ... पर।

साहिल - तुम इस घटना को भूलो।

बेला - पर ... मैं दुख सह न पाती। घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी।

साहिल - ज़रूर बताना। अब खुशी से घर जाओ।

बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी।

(दुख भरी मन से बेला घर चलती है।)

अथवा

टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं। वे दोनों फुलेरा गाँव के पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं। वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं। बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं। दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं। कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है। एक साथ कॉपी लिखते हैं। किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते। एक साथ पानी पीने चले जाते हैं। वे पास-पास रहते हैं। दोनों अच्छे दोस्त हैं। एक का दुख दूसरे का भी है। सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है। छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी। साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है। पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं। दोनों आपस में सांत्वना देते हैं। इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं।

सूचना – 14

1. मुँह की ओर देखना
2. बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है। साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी। इसलिए वह ऐसा सोचती है।
3. **घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप**

माँ - क्या हुआ बेटी,बहुत परेशान दिखती हो ?

बेला - क्या कहूँ माँ,आज स्कूल में एक घटना हुई।

माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?

बेला - नहीं। गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया।

माँ - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी।

बेला - नहीं माँ। मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था।

माँ - छोड दो। मास्टर जी है न ?

बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी।

माँ - कोई बात नहीं। वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है।

अथवा

सही मिलान

ज़रा-सी गलती पर माटसाब	- बच्चों को इधर-उधर फेंक देते थे।
सुरेंदर जी का पीरियड	- खेल घंटी के बाद आता था।
खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले	- बच्चे अपनी-अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे।
उनका हाथ चलना शुरू होता तो	- रुकना फूल जाता था।

सूचना – 15

1. अपमानित होना
2. बेला का मन खराब हो जाएगा।
3. **पटकथा**

स्थान - कक्षा का भीतरी भाग।

समय - दोपहर के साढे बारह बजे।

पात्र - साहिल और बेला दोनों 11 साल के, स्कूली यूनीफॉर्म पहने हैं।
सुरेंदर जी, गणित के माटसाब, करीब 50 साल के, धोती और कमीज़ पहने हैं।

घटना का विवरण - सभी बच्चे चुपचाप बैठे हैं। गणित के माटसाब सुरेंदर जी का प्रवेश।

संवाद –

साहिल – (डरते हुए) बेला, सुरेंदर जी माटसाब आ रहे हैं।

बेला – तूने गृहकार्य पूरा किया ?

साहिल - हाँ।

माटसाब – (सभी छात्रों से) सब मेरे पास आकर अपना कॉपी दिखाना । (एक एक करके उनके पास आकर अपना कॉपी दिखाता है ।)

माटसाब – (बेला को देखकर) बेला, कॉपी लेकर जल्दी आओ इधर ।

बेला - आती हूँ सार ।

माटसाब – (क्रोध से) तूने यह क्या लिखा है अपनी कॉपी में ?

बेला - (डरती हुई) जी मैं ...

माटसाब – (गुस्से में, कॉपी उसके बैठने की जगह फेंकते हुए) जा बैठ अपनी जगह ।

बेला - हे भगवान, बच गया । अब मैं साहिल से कैसे नज़र मिलाऊँ ?

(उदास होकर वह मुँह नीचा करके चुपचाप साहिल के पास जाकर बैठती है ।)

अथवा

माटसाब की डायरी

तारीख: ....

आज मुझसे एक छोटी-सी गलती हो गई । आज कक्षा में कॉपी जाँच रहा था । गुस्से आकर बेला नामक की एक लडकी के बालों में पंजा फँसाया । मुझे लगा कि उसने जो लिखा था वह गलत है । पर सच में वह गलती न होने से मैंने उसे छोड दिया । पुस्तक अपनी बैठने की जगह पर फेंककर वहीं जाकर बैठने को कहा । वह बहुत डरी हुई थी । पूरे छात्रों के सामने वह लज्जित हुई थी । दुख के साथ वह अपनी जगह पर बैठ गई । पता नहीं, वह कैसे छात्रों का सामना किया होगा ? बाद में मुझे लगा कि ऐसा नहीं करना चाहिए था, वो भी एक अध्यापक होकर । पर अब पश्चताने से कोई फायदा नहीं ।

सूचना – 16

1. खेल घंटी में लंगडी टाँग खेलने केलिए
2. **बेला की डायरी**

तारीख: ....

आज का दिन मेरेलिए कैसा रहा, बता नहीं सकती । दीपावली की छुट्टी के बाद आज स्कूल गयी । सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर लडके मुझे चिढाने लगे । यह देखकर साहिल मेरे पास आया । साहिल के आने से मैं उनके मज़ाक उठाने से बच गयी । साहिल परेशान होकर मुझसे पट्टी बँधवाने का कारण पूछा । मैंने उससे खेलघंटी में गाँधीचौक में लंगडी टाँग खेलने की ज़िद की । आखिर मेरी हठ के कारण अंत में उसने मान लिया । पूरे खेलघंटी हम लंगडी टाँग खेलते रहे । खेलते समय भी वह डरा हुआ था कि मुझे कुछ हो गया तो ... । पर ईश्वर की कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ ।

अथवा

बेला का पत्र (अस्पताल में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ ।

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी । तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा । वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था । स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई । एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था । उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था । ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था । बहुत मुश्किल से खडा था । बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी । पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें । अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

HSSLiVE.IN

सूचना – 17

1. गाँधी चौक में
2. छत से गिर जाने के कारण।
3. **पटकथा**

स्थान – स्कूल का मैदान।

समय – सुबह 10 बजे।

पात्र - साहिल और बेला (दोनों 10-11 साल के, स्कूल की वर्दी पहने हैं।)

दृश्य का विवरण– दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी। यह देखकर साहिल उसकेपास आता है।

संवाद -

साहिल -(परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?

बेला -(हँसकर) छत से गिर जाने से चोट लग गयी ।

साहिल - यह कब हुआ ?

बेला - बहुत दिन हो गए ।

साहिल - अब दर्द है क्या ?

बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।

साहिल - नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो.... ?

बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।

साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्ज़ी ।

(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

अथवा

साहिल की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है साहिल नामक ग्यारह साल का लडका । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढता है । उसकी सहेली है बेला । दोनों अच्छे दोस्त हैं,वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं,रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । कॉपी जाँचते समय गणित के माटसाब बेला का अपमान करने पर वह दुखी हो जाता है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर दोनों अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । साहिल में हम एक सरस स्वभाववाले, मित्रता निभानेवाले, स्वाभिमानी लडके को देख सकते हैं ।

सूचना – 18

1. वह छत से गिरने से सिर पर चोट लगी थी ।
2. बेला से उसकी अंतरंग मित्रता की
3. **साहिल का पत्र**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

अथवा

टिप्पणी – अपनी दोस्ती

बचपन में मेरा दिली दोस्त था मनु । मनु के माँ-बाप गरीब थे, पर वह अच्छी तरह पढता था । सातवीं कक्षा तक हम दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । क्लास में हम पास-पास बैठते थे । मैं पढाई में थोडा पिछडा था, इसलिए कभी-कभी पढाई में वह मेरी सहायता करता था । वह अकसर मेरा घर आता था, मैं उसके घर में भी । छुट्टी के दिन हम अन्य बच्चों के साथ पास के मैदान में खेलने जाते थे । खेलने के बाद हम वहाँ के तालाब में नहाने जाते थे । एक दिन हम स्कूल से लौट रहे थे, तब पैर फिसलकर सडक पर गिरने से पाँव में चोट लगी । तब वह मुझे अस्पताल ले गया । सातवीं पास होने पर मैं दूर के स्कूल में भर्ती कराया गया । वह गाँव में ही रहा । फिर हम मिल न पाये । उसकी यादें, अब भी मन में हैं ।

सूचना – 19

1. खेलती हूँ ।
2. दीपावली की छुट्टियों के बादस्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

सूचना – 20

1. छत से गिरने के कारण बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी।
2. चिढाया करती है ।
3. वह **दोस्तों के साथ** खुशी से स्कूल जाता था ।
   वह दोस्तों के साथ खुशी से **छुट्टियों के बाद** स्कूल जाता था ।

सूचना – 21

1. सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए
2. बाँधा करती थी ।
3. **टूटे** स्टूल की कील पिंडली में चोट लग गई ।
   टूटे स्टूल की कील पिंडली में **गहरी** चोट लग गई ।
4. **वार्तालाप को आगे बढाएँ । (अस्पताल में)**

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?

बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।

बेला - कैसे ?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?

साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।

बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?

साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ,नर्स बुला रही है । बाई ।

साहिल – ठीक है बेला,बाई ।

सूचना – 22

1. टूटे स्टूल की कील लगने से ।
2. उसे **सरकारी** अस्पताल में ले जाया गया ।
   उसे सरकारी अस्पताल में **पट्टी बँधवाने** ले जाया गया ।
3. **साहिल की डायरी**

तारीख: ……………….

स्कूल की छुट्टी थी । मैं एक स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूम रहा था । अचानक टूटे स्टूल की एक कील मेरी पिंडली में लग गई । एक इंच का गहरा गड्ढा हो गया । माँ मुझे पट्टी बँधवाने सरकारी अस्पताल ले गई । वहाँ पर बेला को देखा । वह सिर पर पट्टी बँधवाने आई थी । उसके सिर पर पट्टी । मेरी पिंडली में । कितनी एकता है हममें...

अथवा

सही मिलान

साहिल की आँखें	- बीरबहूटी की तरह लाल
साहिल की चोट	- बीरबहूटी का रंग
साहिल के आँसू	- बारिश की बूँदें
बेला के भूरे बाल	- बीरबहूटी की तरह के लाल रिबन से बाँधा

सूचना – 23

1. उसकी पिंडली में कील लगने से हुई चोट को पट्टी बँधवाने केलिए
2. **पटकथा**

स्थान - अस्पताल में ।

समय - सुबह 11 बजे ।

पात्र - साहिल और बेला । (दोनों 11 साल के, साहिल,कुर्ता और पतलून पहना है । बेला,फ्रॉक पहनी है ।)

घटना का विवरण - साहिल पट्टी बँधवाने अस्पताल में खडा होने पर आगे बेला को देखता है । वह उससे बातें करता है ।

संवाद –

बेला - क्या हुआ साहिल ?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।

बेला - कैसे ?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?

साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCR145 ph 9567224545

बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?

साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ,नर्स बुला रही है । बाई ।

साहिल – ठीक है बेला,बाई । (बेला पट्टी बाँधने अंदर जाती है । साहिल कतार में खडा रहता है ।)

अथवा

पोस्टर – कहानी का नाटकीकरण

जी.एच.एस.एस. कोल्लम
कहानी का नाटकीकरण
बीरबहूटी
आयोजन – हिंदी मंच

2019 जून 19 बुधवार को
सुबह 10 बजे स्कूल सभाभवन में

रचना - प्रभात
निदेशन – हिंदी अध्यापक
प्रस्तुति – दसवीं कक्षा
आइए... देखिए...मज़ा लूटिए...
सबका स्वागत
संयोजक प्रधानाध्यापिका

सूचना – 24

1. उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
2. पापा उसे अजमेर भेज देंगे ।

3. **साहिल की डायरी**

तारीख: ....

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और बेला दोनों पास हो गए । लेकिन मन उदास है । क्योंकि कल से बेला से मिल नहीं पाऊँगा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी । घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे । घर से दूर,हॉस्टल में अकेला रहकर पढूँगा । आज तक कितनी खुश थी ! बारिश में बेला के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए । कल से मैं किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद करेगी ? मेरी रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखें भर गईं । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

अथवा

पटकथा

स्थान – फुलेरा कस्बे की एक गली ।

समय – सुबह 11 बजे।

पात्र - साहिल और बेला(दोनों 10-11 साल के,कुर्ता और पतलून पहने हैं ।)

दृश्य का विवरण – दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं ।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?

बेला - हाँ देखा, हम दोनों पास हो गए हैं । लेकिन मैं खुश नहीं हूँ ।

साहिल - क्यों ? तुम बहुत दुखी दिखती हो ।

बेला - हाँ साहिल, आगे हमें एक साथ पढने का अवसर नहीं मिलेगा । यह सोचकर ...

साहिल - मै वह बात भूल गया । अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?

बेला - पापा मुझे अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढाएँगे । और तुम ?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा ।

बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?

साहिल - नहीं यार । तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दो ।

बेला - यह है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)

CREDIT: P. KOVOOR VARKALA, SCR145 ph 9567224545

साहिल – तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तेरी आँखों में भी आँसू क्यों भरे ?

साहिल – मुझे भी नहीं पता ।

बेला - क्या मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल । दुखी मत हो साहिल, हम छुट्टी के दिनों में मिला करेंगे ।

साहिल – तुमने सही कहा । अब हम घर चलें ।

बेला - ठीक है । फिर मिलेंगे ।

(दोनों दुख भरे मन से अलग अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

सूचना – 25

1. गाँव का स्कूल पाँचवीं तक का होने से उन्हें आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में पढना पडेगा ।

2. **साहिल का पत्र**

स्थान : ………………

तारीख : ………………

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

परसों मैं इधर पहुँचा । यात्रा बहुत मुश्किल थी । गाडी में बडी भीड थी । कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई । स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है । बडा स्कूल है । बडे बडे कमरे और मैदान । आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है । कल सुबह स्कूल खुलेगा । होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं । कमरे में मेरा सहवासी है गणेश । वह आगरा से है । स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है । यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं । कल शाम हम घूमने गए । इलाका बहुत सुंदर है । फुलेरा कितना छोटा है । यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं । यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं ।

आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक हैं न ? नया स्कूल कैसा है ? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा । वहाँ की तुम्हारी खबर विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,

नाम

पता ।

अथवा

वार्तालाप – माँ और साहिल के बीच

माँ - क्या हुआ बेटा ? बहुत परेशान दिखते हो ।

साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न ?

माँ - नहीं बेटा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।

साहिल - मैं अजमेर में । ऐसा है न माँ ?

माँ - हाँ बेटा । तुम्हारे पिता ने कहा था ।

साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ ?

माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा ।

साहिल - मुझे नहीं लगता । क्या बेला मुझे भूलेगा ?

माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा ।

साहिल - ठीक है माँ ।

HSSLiVE.IN

सूचना – 26

1. राजकीय कन्या पाठशाला में

2. दोनों अलग-अलग स्कूल जाते हैं ।

3. पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग-अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं । इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे, मिल न पाएँगे । इसलिए ऐसा कहा होगा ।

4. **बेला की डायरी**

तारीख: …………………..

आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ… साथ-साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह अजमेर जाएगा । उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

अथवा

बेला का पत्र स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नयी दोस्त मिली है क्या ? हॉस्टल स्कूल पास ही है न ? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या ? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है ? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है । वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं । मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं । पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे ? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न ? सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना ।

वहाँ की तुम्हारी खबर विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता । नाम

सूचना – 27

1. यह स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
2. आ जाएगी ।
3. **वार्तालाप – साहिल और बेला (रिज़ल्ट)**

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?

बेला - हाँ देखा, हम दोनों पास हो गए हैं । लेकिन मैं खुश नहीं हूँ ।

साहिल - क्यों ? तुम बहुत दुखी दिखती हो ।

बेला - हाँ साहिल, आगे हमें एक साथ पढने का अवसर नहीं मिलेगा । यह सोचकर ...

साहिल - मै वह बात भूल गया । अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?

बेला - पापा मुझे अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढाएँगे । और तुम ?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा ।

बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?

साहिल - नहीं यार । तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दो ।

बेला - यह है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)

साहिल – तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तेरी आँखों में भी आँसू क्यों भरे ?

साहिल – मुझे भी नहीं पता ।

बेला - क्या मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल । दुखी मत हो साहिल, हम छुट्टी के दिनों में मिला करेंगे ।

साहिल – तुमने सही कहा । अब हम घर चलें ।

बेला - ठीक है । फिर मिलेंगे ।

अथवा

साहिल का पत्र – रिज़ल्ट के बाद स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और बेला हम दोनों पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ … साथ-साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से बेला से मिल नहीं पाएगा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी । घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे । घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में बेला के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद रखेगी ? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी । नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे ... पर बेला जैसे कोई नहीं होगी ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता । नाम

सूचना – 28

1. अजमेर
2. बेला की आँखों से आँसू आ जाते हैं।
3. फुलेरे गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था।
4. **बेला का पत्र – रिज़ल्ट के बाद**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ। कई दिनों से सोच रही हूँ कि एक पत्र लिखूँ। पर आज ही अवकाश मिला।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था। मैं और साहिल हम दोनों पास हो गए। मैं बहुत खुश हूँ ... साथ-साथ दुखी भी। क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी। अगले साल मैं राजकीय कन्या पाठशाला में पढूँगी। घरवाले साहिल को अजमेर भेज देंगे। उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा। आज तक कितनी खुशी थी। बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए। कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद रखेगा ? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए। मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है। क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी। नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे ... पर साहिल जैसे कोई नहीं होगा।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना ।
जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

अथवा

पटकथा

स्थान – घर अंदर।
समय – सुबह के साढे 11 बजे।
पात्र – साहिल, करीब 11 साल का, पतलून और कमीज़ पहना है।
माँ, करीब 40 साल की, साडी पहनी हैं।
घटना का विवरण – रिज़ल्ट जानकर स्कूल से घर आने पर साहिल माँ से इसके बारे में बताता है।

संवाद –

माँ – क्या हुआ बेटा? बहुत परेशान दिखते हो।
साहिल – बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न?
माँ – नहीं बेटा। अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी।
साहिल – मैं अजमेर में। ऐसा है न माँ?
माँ – हाँ बेटा। तुम्हारे पिता ने कहा था।
साहिल – बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ?
माँ – बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा।
साहिल – मुझे नहीं लगता। क्या बेला मुझे भूलेगा?
माँ – अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा।
साहिल – ठीक है माँ।
(साहिल निराशा से अपने कमरे में जाता है।)

सूचना – 29

1. तू
2. साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है। इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई दूसरे स्कूल में जाना पडता है।
3. **फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है। इस विषय के आधार पर समाचार तैयार करें।**

फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा की सुविधाएँ नहीं

स्थान : .... फुलेरा गाँव में उच्च शिक्षा केलिए सुविधाएँ नहीं है। यहाँ सिर्फ एक प्राईमरी स्कूल है। वहाँ पाँचवीं तक है। उच्च शिक्षा केलिए यहाँ के लोगों को दूसरे स्थानों पर जाना पडता है। यहाँ से दूसरे स्थान जाने केलिए गाडियों की सुविधाएँ भी नहीं हैं। फुलेरा के अधिक लोग किसान हैं। उनको अपने बच्चों को दूरी पर भेजने की संपत्ति भी नहीं है। यह बात शासकों को समझाई तो भी उनकी ओर से कोई कार्यवाई नहीं किया है। अब फुलेरा के लोग मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को निवेदन करने जा रहे हैं। लोगों का विश्वास है कि इस निवेदन से शासक लोग आवश्यक कार्यवाई लेंगे। ज़रूर यहाँ उच्च शिक्षा की आवश्यक सुविधाएँ देनी चाहिए।

अथवा

सच्ची मित्रता का संदेश देते हुए एक पोस्टर तैयार करें ।

सच्ची मित्रता अनमोल संपत्ति है सच्ची मित्रता से भविष्य उज्ज्वल बनाएगा । सच्चे मित्र सच्चे मार्गदर्शक भी हैं । सच्चे मित्रों को अपनाएँ । सुंदर भविष्य बनाएँ । निराला क्लब, सरकारी हाईस्कूल, स्थान ।

सूचना – 30

1. प्यार
2. जब पाँचवीं कक्षा की पढाई के बाद अलग-अलग स्कूल जाने की तैयारी करते हैं तो साहिल और बेला को यह बात असहनीय महसूस होती है । इस कारण से ही दुखी साहिल की आँखों में आँसू आ जाते हैं । तब उसे सांत्वना देते हुए बेला कहने लगती है कि साहिल की सूरत रोते समय बढती है ।
3. **पटकथा**

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता ।
समय - सुबह के 10 बजे ।
पात्र - साहिल, करीब 11 साल का, पतलून और कमीज़ पहना है ।
बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है ।
घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है । वे आपस में बातें करने लगे ।

संवाद – साहिल – बेला, ज़रा तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो ।
बेला - यह है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दो । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल – तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तेरी आँखों में भी आँसू क्यों भरे ?
साहिल – मुझे भी नहीं पता ।
बेला - क्या मैं चिढाऊँ अब तुम्हें ? रोनी सूरत साहिल रोनी सूरत साहिल । दुखी मत हो साहिल, हम छुट्टी के दिनों में मिला करेंगे ।
साहिल – तुमने सही कहा । अब हम घर चलें ।
बेला - ठीक है । फिर मिलेंगे । (दोनों अलग-अलग रोस्ते से चले जाते हैं ।)

अथवा

वार्तालाप – साहिल और बेला (बिछुडन के बाद)

बेला - अरे साहिल, कैसे हो तुम ? नया स्कूल कैसा है ?
साहिल - ठीक हूँ । स्कूल भी अच्छा है, लेकिन मैं वहाँ अकेला हूँ ।
बेला - कोई दोस्त नहीं ?
साहिल - दोस्त अनेक हैं, लेकिन तेरे जैसे कोई नहीं ।
बेला - मेरी हालत भी तेरी जैसी है । तेरे जैसे दोस्त मुझे भी नहीं ।
साहिल - क्या करें हम ?
बेला - पता नहीं । लेकिन खुशी की एक बात है । सुरेंदर जी जैसे माटसाब वहाँ नहीं ।
साहिल - तेरी आँखों में आँसू क्यों बेला ?
बेला - पता नहीं । और तेरी आँख में ... ?
साहिल - मुझे भी पता नहीं । हम दोनों समान दुखी हैं ।

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCRHS PH 9567104545

पाठ - 2 हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था (कविता, टिप्पणी) कार्यपत्रिका - उत्तर सूचिका

सूचना – 1

1. कवि ने मुसीबत में पडे उस व्यक्ति की समस्या पहचानकर उसकी सहायता करने केलिए उसके सामने हाथ बढाया ।

2. **सही मिलान**

व्यक्ति मुसीबत में है	- हमारी मदद की ज़रूरत है ।
मनुष्यता का अहसास होना ज़रूरी है	- जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं ।
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था	- हताशा को जानता था ।
हम एक दूसरे को नहीं जानते थे	- साथ-साथ चलना जानते थे ।

सूचना – 2

1. उसकी हताशा से जानना
2. सहायता करना
3. **कविता का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ वर्तमान हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री.'विनोद कुमार शुक्ल' की जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देनेवाली सुंदर कवितांश ' हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था ' से ली गई हैं ।

कविता में कवि कहते हैं कि रास्ते पर हताशा से बैठे एक व्यक्ति को देखते ही वे उसकी समस्या जल्दी से पहचान लेते हैं । आपस में न जानने पर भी हाथ बढाकर उसे उठाके उसकी सहायता करके अपने साथ आगे बढाते हैं । कवि के अनुसार व्यक्ति को केवल उसके नाम,पते,उम्र,ओहदे या जाति से जानना नहीं है । उसकी हताशा,निराशा,असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है । कविता मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है । सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है । व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है । अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं ।

आज की स्वार्थी दुनिया में मनुष्य को मनुष्य की तरह देखने का संदेश कवि देते हैं । जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है । कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है ।

सूचना – 3

1. व्यक्ति की मानसिक स्थिति को वे समझ सकते थे ।
2. महिला बैठ रही थी ।
3. व्यक्ति ने कवि का हाथ पकडा और उनके साथ चलने लगा ।
4. **पत्र - कविता के आधार पर अपने मित्र के नाम कवि विनोद कुमार शुक्ल का**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारे पिछले पत्र के जवाब में अभी तक लिख न सका । माफ करो यार ।

आज एक विशेष बात हुई । आज मैं दुकान की ओर चल रहा था । तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा । वह निराश दिख पडा । उसे मैं नहीं जानता था । मैं उसके पास गया । मैंने उसकी ओर हाथ बढाया । वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला । हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था । किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं । मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा ।

तुम्हारे पिताजी और माताजी को मेरा प्रणाम कहना । छोटी बहन को मेरा प्यार । जवाब की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

अथवा

कवि - (हाथ बढाकर) आप उठिए ।

व्यक्ति – क्या, आप मुझे जानते हैं ?

कवि - बिलकुल नहीं ।

व्यक्ति – फिर क्यों मुझे उठाते हैं ।

कवि - आप निराश हैं, यह मैं जानता हूँ ।

व्यक्ति – यह आपको कैसे समझ गया ?

कवि - मुझे भी पहले निराशा का अनुभव हुआ था । इसलिए आपको देखते ही मुझे मालूम हो गया ।

व्यक्ति – आपका यह स्वभाव मुझे बहुत प्रभावित किया ।

कवि - क्या, हम कुछ दूर चलें ?

व्यक्ति – ठीक है, जी ।

सूचना – 4

1. कवि और हताश व्यक्ति
2. **टिप्पणी – सडक पर घायल पडे व्यक्ति को हम क्या-क्या सहायताएँ कर सकते हैं।**

सडक दुर्घटनाओं में बहुत लोग घायल पड जाते हैं। आज के ज़माने में घायल व्यक्तियों को बचाने में लोग हिचकते हैं। कुछ लोग उसे देखे बिना चला जाता है तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहता है तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह तो कितनी बुरी बात है। उचित समय पर उसे अस्पताल पहुँचाना मनुष्यता का लक्षण है। घायल पडे व्यक्ति कभी किसी के घर की रोशनी होगी। अगर उसकी रक्षा न की जाए तो उस घर में अंधेरा छा जाएगा। एक और बात है आज उस व्यक्ति को हुआ हादसा अपने आपको या अपने परिवार में भी होने की संभावना है। इसलिए घायल व्यक्तियों को बचाने केलिए उचित कारवाई करना मनुष्य अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

सूचना – 5

1. मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है।
2. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं। इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं। इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं। कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ। कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था। दोनों साथ-साथ चले। यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है। कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

अथवा

पोस्टर (points) संदेश – सडक सुरक्षा

1. यातायात की सुरक्षा नियमों में सख्ती तभी मिलेगी, दुर्घटनाओं से मुक्ति	5. सडक पर वाहन धीमा चलाये, तेज़ रफ्तार से नहीं
2. सुरक्षित जब रहेंगे आप तभी दे पाएँगे अपनो के साथ	6. चौपहिया वाहन चालक सदैव सीट बेल्ट पहने दुपहिया वाहन चालक हेलमेट
3. दुपहिये वाहन पर तीन सवारी न बिठाएँ गाडी चलाते वक्त ज़्यादा मस्ती करना खतरा है।	7. सही दिशा से ओवरटेक करें हरेक जीवन अनमोल है
4. शराब पीकर गाडी न चलाएँ गाडी चलाते वक्त मोबाइल, धूम्रपान आदि न कराएँ	8. रेलवे पटरियों को पार करते वक्त रेलवे क्रॉसिंग का उपयोग करें 9. 18 साल के कम उम्र के बच्चे गाडी चलाना कानूनी जुर्म है।

सूचना – 6

1. व्यक्ति को नहीं जानना- का मतलब है व्यक्ति को जानना उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि जानना नहीं है।
   हताशा को जानना – का मतलब है व्यक्ति को जानना उसकी हताशा, निराशा, असहायता, संकट आदि को जानना है।
2. **टिप्पणी – मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है।**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है। किसी व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि को जानने की ज़रूरत नहीं है। उसकी हताशा, निराशा, असहायता, संकट आदि को जानना ही काफी होगा। यदि किसी व्यक्ति को इन बातों से हम नहीं जानते तो उस व्यक्ति के बारे में हम कुछ नहीं जानते। दुख-दर्द और एहसास सबके एक जैसे होते हैं। उसे समझने केलिए किसीको वैयक्तिक रूप से जानने की ज़रूरत नहीं। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है, जानकिरियों का नहीं। किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें।

सूचना – 7

1. विनोद कुमार शुक्ल
2. कवि के अनुसार जानने का मतलब व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता, उसके संकट आदि से जानना है। नहीं जानने का मतलब व्यक्ति को जानना उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि से नहीं है। व्यक्ति को जानने केलिए उसकी व्यक्तिगत जानकारियों की ज़रूरत नहीं, उसके दुख-दर्द, कठिनाई, समस्या, आवश्यकता आदि को जानना काफी है।
3. **कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी (हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था)**

कविता के अनुसार कवि विनोद कुमार शुक्ल ने सडक पर घायल पडे व्यक्ति की, अपरिचित होने पर भी उसकी हताशा पहचानकर उसकी मदद की। व्यक्ति को पहचानने केलिए कवि को उसके व्यक्तिगत जानकारी की आवश्यकता नहीं थी। कवि व्यक्ति को सिर्फ उसके दुख-दर्द, कठिनाई, समस्या, आवश्यकता आदि से जानने की कोशिश की। लेकिन वर्तमान ज़माने के लोग ऐसा नहीं है। उनमें मनुष्यता देखने को भी नहीं मिलता। सभी को अपनी-अपनी बातें हैं। सामाजिक जीवन में एक दूसरे के बीच प्यार, सहानुभूति जैसी भावनाओं का होना ज़रूरी है। यदि किसी व्यक्ति को, चाहे अपरिचित हो आवश्यकता पडने पर सहायता देना ही जानना शब्द का सही अर्थ है। सडक पर घायल पडे एक व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की ज़रूरत है। कवि के अनुसार मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं। जानना शब्द की हमारी जानी-पहचानी रूढी पूरी तरह बदल देनेवाली यह कविता मनुष्यत्व रहित इस ज़माने में बिलकुल प्रासंगिक है।

अथवा

पोस्टर (points)संदेश – नेत्रदान महादान

1. जीवन का अनमोल वरदान नेत्रहीन को नेत्रदान	2. नेत्रदान करेंगे दुनिया फिर से देखेंगे
3. नेत्रदान का संकल्प लें ताकि किसी का अंधेरा जीवन उजाले से भर जाए	4. जाने से पहले किसीको दे दो जीवनदान, अमर रहना है तो कर दो नेत्रदान ।
5. नेत्रदान से बडा कोई दान नहीं है, जिससे जीव निर्जीव होकर भी दूसरे के काम आ सकता है ।	6. नेत्रदान कीजिए, मानवता के हित में काम कीजिए ।
7. आँखों को कभी मिटने न दें, जीवन के पश्चात भी इन्हें जीने दे ।	8. नेत्रदान मरके भी ज़िंदा रहने का अनमोल वरदान है ।

सूचना – 8

1. क्योंकि वह कवि के हाथ बढाने को जानता था ।

2. अपरिचित/ हताश व्यक्ति

3. कवि हाथ बढाने लगे ।

4. **हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता के आधार पर कवि विनोद कुमार शुक्ल की डायरी**

तारीख:.......................

आज मैं दुकान की ओर चल रहा था । तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा । वह निराश दिख पडा । उसे मैं नहीं जानता था । मैं उसके पास गया । मैंने उसकी ओर हाथ बढाया । वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला । हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था । किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं । मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा ।

सूचना – 9

1. व्यक्ति को उसके नाम,पते,उम्र,ओहदे या जाति से जानना ।

2. करोगे

3. **टिप्पणी – मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना है ।**

समकालीन हिंदी कवि विनोद कुमार शुक्ल की हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता पर नरेश सक्सेना लिखी टिप्पणी में जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत किया है । यह कविता हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं । किसीकी मदद करने केलिए उसकी दुख-दर्द और एहसास को समझना ही उचित होगा । यानी एक व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति अदि की ज़रूरत नहीं । उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है । मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए । सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है । व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है । अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं ।

अथवा

पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1.अंगदान जीवन दान... अंगदान जीवन में मुस्कान ।	2.अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान... स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान ।
3.अंधविश्वास को छोडिए... अंगदान में सहयोग दीजिए ।	4.मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण... आगे बढिए और कीजिए अंगदान ।
5.करो दान किड्नी,नेत्र,हृदय,जिगर और देह की... अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें ।	6.जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

सूचना – 10

1. उसकी सहायता करनी चाहिए ।

2. जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ । अकसर हम दूसरों को उसके नाम,पते,उम्र,ओहदे या जाति से ही जानते हैं । लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए । उसकी हताशा,असहायता,दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता ।

3. **लेख -जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व**

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है । हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है । अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं । मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं, इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा । जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है । हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है,वही सच्चा मानव है । दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए । हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए । दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं । ऐसे लोग अमर बन जाते हैं । हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार-भरे जीवन बिता सकेंगे । संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए ।

सूचना – 11

1. सांत्वना देकर अस्पताल पहुँचाना

2. चाहते हैं ।

3. **रपट**

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा। उसके शरीर से खून बह रहा था। उसका एक हाथ टूट गया था। सिर पर भी चोट लग गई थी। उसकी हालत बहुत नाजुक थी। बहुत लोग उसके पास से गुज़रे। पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की। कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे। भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया। उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई। इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं। वे अपने–अपने बारे में ही सोचते हैं। दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं। यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है।

सूचना – 12

1. व्यक्ति को उसकी हताशा से जानना
2. किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। उसकी हताशा, दुख-दर्द, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है।

3. **लेख- अवयव/ अंगदान का महत्व**

अवयवदान जीवन का महादान है। हम 13 अगस्त को विश्व अवयवदान दिवस मनाते हैं। मरने के बाद और जीते जी कुछ लोग अपने अवयवों को दान करने केलिए तैयार होते हैं। हमें अपने अवयवों को दान करने से अनेकों के जीवन बचा सकते हैं। आँख, किड्नी, हृदय, फेफडा, जिगर आदि शरीर अंग हम दान कर सकते हैं। इससे हम कुछ लोगों के अंधकार में डूबी ज़िंदगी को प्रकाशमय बना सकते हैं। रक्तदान से किसी ज़रूरतमंद की जान हम बचा सकते हैं। कुछ लोग मृत्यु के बाद अपने शरीर मेडिकल विद्यार्थियों को देने का निश्चय करते हैं। ऐसे लोग मरने के बाद भी समाज केलिए काम आते हैं। इसलिए हम भी अंगदान में शामिल हो जाएँ और कोई दूसरे की ज़िंदगी को बचाएँ।

सूचना – 13

1. हताश, असहाय और संकट में पडे
2. सडक पर **घायल** पडे व्यक्ति की मदद करनी चाहिए।
   सडक पर घायल पडे **अपरिचित** व्यक्ति की मदद करनी चाहिए।

3. **टिप्पणी – जानना शब्द की लेखक की व्याख्या**

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। यहाँ लेखक ने जानना शब्द की हमारी उस जानी-पहचानी रूढी को तोड दिया है, जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोडती है। प्रस्तुत टिप्पणी में लेखक ने जानना शब्द को नए ढंग से परिभाषित किया है। इस व्याख्या के पीछे लेखक का उद्देश्य व्यक्ति की आंतरिकता को जानने से है। जैसे अगर कोई व्यक्ति सडक पर घायल अवस्था में पडा है, तो हमें मदद करनी चाहिए। क्योंकि दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है –जानकारियाँ का नहीं। किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें।

HSSLiVE.IN

सूचना – 14

1. कवि व्यक्ति की हताशा को जानता था।
2. **पोस्टर (points) संदेश – सडक पर घायल पडे लोगों की जान बचाना मनुष्यता है**

1. घायलों को जल्दी जल्दी पहुँचाएँ अस्पताल
   रक्त बहाकर उन्हें वहाँ पडने न दें
2. सडक पर घायल पडे को बचाना मनुष्यता है
   हरेक व्यक्ति की जान कीमत है
3. घायल पडे लोगों को देखे बिना गुज़रना नहीं चाहिए
   मोबाइल पर फोटो खींचने पर नहीं,
   उसकी रक्षा करने में हमारा ध्यान होना चाहिए।
4. घायल पडे की जान बचाएँ
   उनके घर का प्रकाश मिटने न दें
5. ध्यान रखें, उसे देखे बिना जाने वाले आपको ही
   यही हालत होने की संभावना है
6. घायलों का फोटो खींचकर लैक मिलने में नहीं
   उसपर मनुष्यता दिखाने में होना है हमारा ध्यान

सूचना – 15

1. सहानुभूति का भाव अपनाना
2. तुझे उसकी हालत मालूम है।
3. **पोस्टर – रक्तदान का महत्व**

रक्तदान जीवनदान

1. रक्तदान को बनाइए अभियान,
   रक्तदान करके बचाइए जान।
2. रक्त के मोल को जानो,
   उसमें छुपी जिंदगी को पहचानो।
3. रक्तदान कीजिए
   राष्ट्रीय एकात्मता बढाइए।
4. आपके रक्तदान के कुछ मिनट का मतलब है
   किसी ओर केलिए पूरा जीवनकाल।
5. रक्तदान इंसानियत की पहचान,
   आओ करो रक्तदान।
6. रक्तदान अपनाओ
   सबका जीवन बचाओ।
7. रक्तदान करने से नहीं होती शरीर में कमज़ोरी,
   रक्तदान करने में कभी मत करना सोची समझी।
8. मानवता के हित में काम कीजिए
   रक्तदान में भाग लीजिए।

विश्व रक्तदान दिवस – जून 14

पाठ - 3 टूटा पहिया (कविता) कार्यपत्रिका - उत्तर सूचिका

सूचना – 1

1. दुस्साहसी
2. अभिमन्यु
3. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री.धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है,किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कविता में टूटा पहिया स्वयं कहता है कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ,किंतु मुझे बेकार समझकर मत फेंको। क्योंकि इस दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। तब मैं ही उसका सहारा बन सकता हूँ। यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का,चक्रव्यूह जीवन की विषमताओं का और अभिमन्यु शोषण से पीडित आम जनता का प्रतीक है। प्रस्तुत पंक्तियों के ज़रिए कवि यह व्यक्त करना चाहते हैं कि जिस प्रकार टूटा पहिया अभिमन्यु केलिए उपयोगी बना,उसीप्रकार आज के अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में आम जनता केलिए इस टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य ही काम आएगा। इसलिए इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है,जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

सूचना – 2

1. किसी दुस्साहसी अभिमन्यु का
2. सेना
3. **टूटा पहिया कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें।**

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की छोटी कविता है टूटा पहिया। प्रस्तुत कविता में रथ का टूटा हुआ पहिया हमें बताता है कि उसे बेकार समझकर मत फेंकना। दुरूह चक्रव्यूह रचकर कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में महीरथियों को लडने केलिए तैयार होते देखकर उन्हें चुनौती देता हुआ अभिमन्यु आगे आया। इसी प्रकार हो सकता है कि हमारे समाज में अमर्ध की अक्षौहिणी सेनाओं से लडने के लिए सच्चाई के मार्ग पर टलनेवाला कोई नौजवान आए। ज़रूरत के अवसर पर अभिमन्यु टूटे पहिये का सहारा लेता है। उसीप्रकार सच्चाई की स्थापना के लिए हमारे सामने जो भी चीज़ आएगी उसे बेकार मत समझना। आज के समाज के शोषित जन को शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान भी इसमें है।

सूचना – 3

1. टूटा पहिया
2. जीवन की विषमताएँ
3. **सही मिलान**

रथ का टूटा हुआ पहिया – ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ।

इतिहासों की गति झूठी पडने पर – सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले।

अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ – दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए।

अकेली निहत्थी आवाज़ को – ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें।

सूचना – 4

1. दुरूह
2. अभिमन्यु
3. **कवितांश की प्रासंगिकता पर टिप्पणी (क्या जाने ..... घिर जाए)**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कुरुक्षेत्र युद्ध में महारथियों से रचे चक्रव्यूह को भेदकर अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ अभिमन्यु धीरता से लडा। उस वक्त सभी महारथी एकसाथ उनपर टूट पडे। तब रथ का टूटा पहिया ही अकेले निहत्थे अभिमन्यु का हथियार बना। आधुनिक समाज में भी अधिकारी वर्ग आम लोगों का शोषण करते वक्त मानवीय मूल्यों को हथियार बनाकर कुछ साहसी लोग उनके विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं।

मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रैसंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

अथवा

सही मिलान

चक्रव्यूह	- जीवन की समस्याएँ
अभिमन्यु	- साहसी युवा पीढी
टूटा पहिया	- तुच्छ मानव
ब्रह्मास्त्र	- सर्वनाश

सूचना – 5

1. चुनौती
2. अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह में घुसने की विद्या ही जानता था । लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता उसे पता नहीं था । फिर भी बिना सोचे शत्रुओं की चुनौती स्वीकार करके चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करके युद्ध करने तैयार हुआ । इसलिए अभिमन्यु को दुस्साहसी कहा गया है ।

सूचना – 6

1. बडे-बडे
2. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी महाभारत युद्ध में बडे बडे महारथी मिलकर निरायुध अभिमन्यु पर आक्रमण किया । किसीने अभिमन्यु की असहाय आवाज पर ध्यान नहीं दिया । उसी प्रकार आज भी आम जनता या उपेक्षित मानव अधर्म और अत्याचारों को रोकने का अधिकार है,वे भी अधार्मियों के पक्ष लेते हैं ।

सूचना – 7

1. अभिमन्यु की
2. कुचल देना
3. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **‘ श्री.धर्मवीर भारती ’** की कविता संग्रह **‘ सात गीत वर्ष ’** से चुनी गई ‘ टूटा पहिया ’ कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है,किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी महाभारत युद्ध में बडे बडे महारथी मिलकर निरायुध अभिमन्यु पर आक्रमण किया । किसीने अभिमन्यु की असहाय आवाज पर ध्यान नहीं दिया । उसी प्रकार आज भी आम जनता या उपेक्षित मानव अधर्म और अत्याचारों को रोकने का अधिकार है, वे भी अधार्मियों के पक्ष लेते हैं ।

मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रैसंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है,जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

सूचना – 8

1. टूटा पहिया
2. सामना करना
3. **टूटा हुआ** पहिया लोहा ले सकता हूँ ।
   टूटा हुआ पहिया **ब्रह्मास्त्रों से** लोहा ले सकता हूँ ।
4. **कवितांश का आशय (तब मैं ..... लोहा ले सकता हूँ)**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **‘ श्री .धर्मवीर भारती ’** की कविता संग्रह **‘ सात गीत वर्ष ’** से चुनी गई ‘ टूटा पहिया ’ कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं का सामना करता है । उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा ।

मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

अथवा

युद्ध विरुद्ध पोस्टर तैयार करें ।

युद्ध छोडो ... सब मिलजुलकर रहो ...

1. युद्ध विनाशकारी है । युद्ध छोडो शांति से रहो ।	2. युद्ध से किसीको कोई लाभ नहीं युद्ध सर्वनाश है उसको रोको ।
3. युद्ध देश को विकास की ओर नहीं, विनाश की ओर ले जाता है ।	4. युद्ध से दूर रहें ... मानवराशी को बचाएँ ।
5. बंदूक, तोप, अणुबम आदि का प्रयोग न होने दे ... मानव की धन-संपत्ति, घर, बंधुजन आदि का नाश न करने दे ।	6. युद्ध की भयानकता समझो आगे युद्ध न होने केलिए सब कोशिश करें ।

हिरोशिमा दिवस – अगस्त 6

सूचना – 9

1. मैं
2. टूटा पहिया
3. चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है । उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा

सूचना – 10

1. बडे-बडे महारथी का
2. शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए ब्रह्मास्त्र से अकेले निरायुध व्यक्ति की असहाय आवाज़ को कुचल देना चाहते हैं । अगर उसके शस्त्रहीन हाथों में रथ का पहिया आ जाए तो वह ब्रह्मास्त्र से लड सकता है, उसका सामना कर सकता है ।

3. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी महाभारत युद्ध में बडे बडे महारथी मिलकर निरायुध अभिमन्यु पर आक्रमण किया । किसीने अभिमन्यु की असहाय आवाज पर ध्यान नहीं दिया । उसी प्रकार आज भी आम जनता या उपेक्षित मानव अधर्म और अत्याचार से लडते रहते हैं । जिन लोगों को इन अधर्म और अत्याचारों को रोकने का अधिकार है, वे भी अधार्मियों के पक्ष लेते हैं । चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है । उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा ।

मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रैसंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

HSSLiVE.IN

सूचना – 11

1. निहत्थी
2. सकते हो ।
3. **टिप्पणी – तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी कभी काम आ सकती है ।**

महाभारत युद्ध में चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु पर कौरवों ने आक्रमण किया । उस समय उसके विरुद्ध लडने में अभिमन्यु केलिए रथ का टूटा हुआ पहिया उपयोगी बना। उसी प्रकार वर्तमान समय में भी समाज कौरवों के जैसे ही अन्यायी और दुराचारी लोगों से भरा हुआ है, जो अपनी अधार्मिक शक्तियों के माध्यम से किसी अकेले समाज सेवी,जो उनके विरुद्ध आवाज़ उठाता है,उसको अपनी शक्तियों के दम पर अधर्म के माध्यम से समाप्त कर देते हैं । तब उसे अपने टूटे हुए मानव मूल्यों की आवश्यकता पडेगी । उस विपरीत परिस्थिति में वे टूटे हुए मानव मूल्य उसकेलिए लाभदायक होंगे । टूटा पहिया यहाँ टूटे हुए मानव मूल्यों का प्रतीक है । हमें किसी भी मूल्य और वस्तु को निस्सार, अनुपयोगी मानकर फेंकना नहीं चाहिए। क्योंकि पता नहीं कब समय बदले,परिस्थितियाँ विपरीत हो जाएँ और वह निस्सार वस्तु या मूल्य अपनेलिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो । तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ हो सकती है । जब दुनिया में मानव मूल्यों का नाश होता रहेगा, तो साधारण मनुष्य उन्हीं मानव मूल्यों को समेटकर समाज की भलाई केलिए कर्मनिरत रहेगा । मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी ।

सूचना – 12

1. महाशक्ति
2. टूटा पहिया
3. कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं, उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है । महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था । उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा ।
4. **टिप्पणी - वर्तमान संदर्भ में टूटा पहिया कविता की प्रासंगिकता (अपना विचार)**

टूटा पहिया धर्मवीर भारती की प्रतीकात्मक कविता है । महाभारत की घटना पर लिखी प्रस्तुत कविता वर्तमान परिवेश में बहुत ही प्रासंगिक है । टूटा हुआ पहिया समाज से बहिष्कृत निम्न एवं हाशिए पर लगे लोगों का प्रतीक है । तुच्छ एवं बहिष्कृत होनो पर भी समाज में जब आवश्यकता पडे तब यह काम आएगा । आज सामूहिक गति महारथियों के इशारे पर बदलती रहती है । सत्य धर्म की रक्षा केलिए टूटे पहिये का सहारा मिलेगा । समाज के महारथी लोग पौराणिक काल से सत्य, धर्म आदि के बदले छल, कपट आदि अपनी स्वार्थ पूर्ति केलिए अपनाते थे । महाभारत के इतिहास में सामाजिक गति झूठी पड जाने पर सत्य ने टूटे पहिए का आश्रय लिया । उसी प्रकार वर्तमान युग में भी सत्य धर्म का नाश होते समय उनकी रक्षा केलिए टूटा पहिया या लघु मानव होगा । यहाँ कवि टूटे हुए पहिये को तुच्छ समझकर न फेंकने का उपदेश देता है ।

सूचना – 13

1. सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले !
2. मैं + को = मुझे
3. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री.धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए । मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा ।

मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रैसंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

सूचना – 14

1. सामान्य मानव
2. आश्रय
3. आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। तब सत्य के पक्ष,आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा।
4. **कवितांश का आशय (इतिहासों की .... आश्रय ले)**

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि टूटे पहिए के द्वारा यह बताना चाहते हैं कि आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष,आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा। मनुष्यों को अपनी मानवीय मूल्यों को त्याग न करने की उपदेश देनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

अथवा

पोस्टर (points) संदेश – हाशिए पर लगे लोगों की रक्षा

1. हाशिए पर लगे लोगों की रक्षा में ही हमारी सुरक्षा
2. टूटे पहियों की संभावनाओं को भी पहचानें
   इसे तुच्छ समझकर मत फेंको।
3. निम्न लोगों से उच्च उम्मीद करें
4. लघु मानव की प्रतिष्ठा से समाज का कल्याण
5. इतिहास की सामूहिक गति झूठी पडेगी
   हमें टूटे हुए मानव मूल्यों को सहारा लेना पडेगा।
6. तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ
7. समाज की भलाई केलिए कर्मनिरत रहें
   सामान्य मनुष्य मानवीय मूल्यों को समेटकर रखें।
8. मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी
9. विपरीत परिस्थित में टूटे हुए मानवीय मूल्य अपनेलिए लाभकारी होंगे।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA,

पाठ - 4 आई एम कलाम के बहाने (फिल्मी लेख) कार्यपत्रिका - उत्तर सूचिका

सूचना – 1

1. क्लास में उसकी सतर्कता तथा पढाई के प्रति उसकी रुचि
2. अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था ।
3. **मिहिर की डायरी**

तारीख: ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । आज मैं मित्र मोरपाल के साथ खाने केलिए बैठा । मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखकर वह बहुत खुश हुआ था । वह पहली बार राजमा देख रहा था । उसकी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । मेरेलिए तो यह सामान्य-सी चीज़ था । पर उसकेलिए वह खास चीज़ थी । उसने खाने केलिए छाछ लाया था । छाछ मेरी कमज़ोरी थी । हमने आज से खाना अदला-बदली करके खाने का निश्चय किया । मैं उसकेलिए राजमा लाऊँगा, वह मेरेलिए छाछ । हम दोनों बडी चाव से खाना खाते रहे ।

अथवा

पोस्टर (संदेश) – गरीबी विषय पर

देश की उन्नति केलिए
गरीबी
दूर करनी चाहिए ।
राष्ट्र निर्माण केलिए गरीबी हटाएँ ।
गरीबी देश के सर्वनाश का कारणबनता है ।
एक-एक नागरिक का कर्तव्य है गरीबी हटाना ।
गरीबी हटाने केलिए सक्रिय भागीदारी करें ।
गृह संत्रालय, नई दिल्ली

सूचना – 2

1. समान काम करनेवाला
2. पढाया करती है ।
3. **टिप्पणी – मोरपाल और मिहिर की दोस्ती**

बचपन में मोरपाल और मिहिर अच्छे दोस्त थे । गाँव के स्कूल में दोनों एक साथ पढते थे । क्लास की दरीपट्टी पर नाम का पहला अक्षर मिलने से दोनों की बैठने की जगहें साथ थीं । खेल घंटी में दोनों खाना अदला-बदली करके खाते थे । मोरपाल अपने घर से छाछ लाकर मिहिर को देता था और मिहिर अपने घर से राजमा-चावल लाकर मोरपाल को देता था । दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे । पढाई में वे एक दूसरे की सहायता भी करते थे । दोनों अपनी दोस्ती को बनाये रखने की कोशिश भी करता था । उनकी दोस्ती के बीच अमीरी-गरीबी की कोई भेदभाव नहीं था ।

सूचना – 3

1. रविवार को घर पर कमर-तोड काम करना पडता है ।
2. **सही मिलान**

रोज़ स्कूल जाना	- मिहिर को पसंद नहीं था ।
शादी में मोरपाल	- यूनीफॉर्म पहनकर आता था ।
रविवार की छुट्टी	- मोरपाल को बुरी लगती थी ।
स्कूल की छुट्टी मिलने पर	- लेखक घर में खुशी मनाता था ।

अथवा

मोरपाल का पत्र

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मेरा दोस्त मिहिर रोज़ राजमा लाता है । उसके खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मैं खुशी से खिल जाता हूँ । उसके टिफिन बॉक्स से मैंने पहली बार राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ है । मेरी छाछ उसको बहुत पसंद है । उसके घर में रोज़ राजमा पकाता है । उसकेलिए वह सामान्य चीज़ है । वह बहुत निष्कलंग है । लेकिन स्कूल जाना उसे पसंद नहीं है । छुट्टी के दिन पर वह घर में नाचा करता। जो भी हो,अब मुझे यहाँ भी एक मनपसंद मित्र को मिला । मिहिर जैसे एक मित्र को मिलने पर मैं बहुत भाग्यशाली हूँ ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

सूचना – 4

1. प्रसन्न हो जाना

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

2. रोया करती है ।
3. **क्लास की** दरीपट्टी पर हमारी जगहें साथ थीं ।
   क्लास की दरीपट्टी पर हमारी **बैठने की** जगहें साथ थीं ।
4. **मिहिर का पत्र (मोरपाल रोज़ स्कूल आता है)**

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हें देखने की इच्छा से मैं तुम्हारे गाँव में आया था, पर देख न सका । तुम्हारे जैसा एक दोस्त है मुझे । हम कक्षा में पास-पास बैठते हैं । उसका नाम मोरपाल है । वह हर दिन घर से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । स्कूल के प्रति उसका प्रेम गहरा है । मैं छुट्टी मिलने पर नाचता हूँ और खुशियाँ मनाता हूँ । लेकिन वह छुट्टी पर रोता है । वह हर दिन स्कूल आता है । पढने की उसकी इच्छा देखकर मुझे बडी खुशी आती है । वह भी तुम जैसे प्यारा है । एक दिन मैं उसे लेकर तुम्हारे घर आऊँगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

अथवा

मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था । उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था । उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था । वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था । उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैंट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी । स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था । रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था ।

सूचना – 5

1. मोरपाल की गरीबी
2. मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था । वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा-चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।
3. **पटकथा**

स्थान - स्कूल के कमरे में ।
समय - दोपहर के 1 बजे ।
पात्र - मिहिर और मोरपाल (दोनों 11 साल के। यूनीफॉर्म पहने हैं ।)
घटना का विवरण - खेल घंटी के समय दोनों खाना खाने लगते हैं। दोनों आपस में बातें करते हैं ।
संवाद -
मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।
मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?
लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?
मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।
लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?
मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।
लेखक – वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?
मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।
लेखक – तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है ।
मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।
लेखक – ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं ।
मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।
लेखक – ठीक है ।
(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं ।)

अथवा

HSSLiVE.IN

वार्तालाप – लेखक और मोरपाल

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।

लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।

मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?

लेखक - यह तो राजमा है । क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?

मोरपाल - नहीं यार । मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ ।

लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?

मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ ।

लेखक – वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?

मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है ।

लेखक – तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है ।

मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ ।

लेखक – ज़रूर । आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं ।

मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है । खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ ।

लेखक – ठीक है ।

सूचना – 6

1. मिहिर के खाने के डिब्बे में रखे राजमा देखकर
2. मोरपाल **गाँव से** साइकिल चलाता स्कूल आता था।
   मोरपाल गाँव से साइकिल चलाता **रोज़** स्कूल आता था।
3. **वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच**

मिहिर - अरे मोरपाल, तुम आ गए ?

मोरपाल - हाँ । आज मैं बहुत थक गया ।

मिहिर - वह कैसे ?

मोरपाल - इस गर्मी में पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर आया है न ?

मिहिर - ओ ... मैं भूल गया ।

मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा-चावल ?

मिहिर - वह मेरे बैक में है । और मेरा छाछ ?

मोरपाल - वह तो साइकिल के पीछे रखा है ।

मिहिर - यार तुम यह डिब्बा इतने दूर बिना छलकाए कैसे लाते हो ?

मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार । अभ्यास हो गया ।

मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है । मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा । जल्दी चलो, स्कूल की घंटी लग गई है ।

मोरपाल - ठीक है । साइकिल रखकर मैं अभी आया ।

अथवा

लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है । पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं । उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते । उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है । कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं,पढाई में आगे हैं । पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है । गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं ।

सूचना – 7

1. समान आयु का
2. **मोरपाल की डायरी**

तारीख: ……………….
आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । कल रविवार स्कूल की छुट्टी ... । हे भगवान पूरे दिन घर में कमरतोड मेहनत करना पडेगा । याद करते ही मन दुख से भर जाता है । स्कूल है तो यूनीफॉर्म पहनकर खेत मजूरी से बच पाता । पर ... दुख की बात है कल राजमा भी खा न सकता । मित्रों के साथ खुशी से कल बिता नहीं पाएगा । मुझे तो पढना ही बहुत पसंद है । लेकिन घरवालों को मुझसे काम करवाना अच्छा लगता है । काश रविवार को छुट्टी न होते तो कितनी अच्छी बात होती ! आज बस इतना ही ... बहुत नींद आ रही है । मैं सोने जा रहा हूँ ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

अथवा

लघु लेख – मित्रता/ दोस्ती

दोस्ती जीवन की सबसे कीमती उपहारों में से एक है । जिसकी ज़िंदगी में सच्चे दोस्त हैं, वह भाग्यशाली है । यह रिश्ता मनुष्य खुद बनता है । सच्चा मित्र मुश्किल हालतों में भी हमारे साथ खडा होता है । यह तो अनमोल धन के समान होता है । इसकी तुलना हम दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं कर सकते । सच्ची मित्रता से एक साधारण मानव भी श्रेष्ठ और पूजनीय अनुभव है । अमीर- गरीब, छोटा-बडा आदि बातों में मित्रता का कोई स्थान नहीं है ।

सूचना – 8

1. वे यूनीफॉर्म पहना करते थे ।
2. लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।
3. पटकथा

स्थान - स्कूल का रास्ता ।

समय - सुबह के10 बजे ।

पात्र - मिहिर और मोरपाल । (दोनों 10 साल के,स्कूली यूनीफॉर्म पहने हैं ।)

घटना का विवरण - बारिश के कारण एक दिन छुट्टी लेने के बाद मिहिर स्कूल आता है । रास्ते में वह मोरपाल से मिलता है ।

संवाद -

मोरपाल – यार, तुम कल कहाँ गए थे ?

मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?

मोरपाल – तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?

मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।

मोरपाल – पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।

मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?

मोरपाल – स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है ।

मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?

मोरपाल – हाँ लाया । तुम राजमा भी लाया है न ?

मिहिर - नहीं भूला । अब हम क्लास में जाएँ । घंटी बजा होगा । क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है ।

मोरपाल – ठीक है । जल्दी चलो ।

(दोनों खुशी से क्लास की तरफ चलते हैं ।)

अथवा

मिहिर की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

आई एम कलाम के बहाने फिल्म का के रचयिता मिहिर पांडेय संपन्न परिवार में जन्मा था । गाँव के स्कूल में बचपन की पढाई की थी । वहाँ उनका साथी था मोरपाल । नाम का पहला अक्षर मिलने से वह मोरपाल के पास बैठता था । खेल घंटी में वह मोरपाल के साथ खाने की अदला-बदली करता था । लेखक केलिए सामान्य चीज़ राजमा मोरपाल को देकर उसके घर से लाता छाछ वह खाता था । छाछ उसकी कमज़ोरी थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । वह स्कूल जाने में हमेशा रोया करता था । रोज़ नए बहाने बनाया करता और जब तेज़ बारिश के दिनों में स्कूल के रास्ते में पानी भर जाने से छुट्टी हो जाया करती, तो वह घर पर नाचा करता । उसकेलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म बोझ थी । उसके पास उससे बेहतर कपडे थे जिन्हें उसने अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदा था । वह स्कूल की यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता और उसे पहनना हमेशा टाला करता । इससे अमीर होने पर भी दोस्ती को पसंद करनेवाला और स्कूल जाना, यूनीफॉर्म पहनना आदि न पसंद करनेवाले बच्चे को यहाँ हम उसमें देख सकते हैं ।

सूचना – 9

1. आठवीं के बाद उसकी स्कूल छूट जाता है ।
2. मनाता है ।

3. **पटकथा**

स्थान - स्कूल का रास्ता ।

समय - सुबह के10 बजे ।

पात्र - मिहिर और मोरपाल । (दोनों 10 साल के,स्कूली यूनीफॉर्म पहने हैं ।)

घटना का विवरण - स्कूल से वापस जाने पर दोनों आपस में बातें करते हैं ।

संवाद -

मिहिर – अरे मोरपाल, मैं तुमसे एक बात पूछूँ ?

मोरपाल - पूछो यार, क्या बात है ?

मिहिर – क्या तुम्हें स्कूल आना बहुत पसंद है ?

मोरपाल - हाँ, क्या है ?

मिहिर – तुम एक दिन दिन भी छुट्टी क्यों न लेते ?

मोरपाल - स्कूल आने से मैं घर की खेत मजूरी से बच जाती और अपने मित्रों से मिल सकूँगा और खेल सकूँगा ।

मिहिर – ठीक है यार । मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं ।

मोरपाल – क्या छुट्टी पसंद है ?

मिहिर – हाँ, लेकिन मुझे तो हमारी दोस्ती बहुत पसंद है ।

मोरपाल – मुझे भी ऐसा ही है यार । काश हमारी दोस्ती कभी न छूट जाती !

मिहिर - फिकर मत करो यार, हमारी दोस्ती इसी तरह बनी रहेगी । अब मैं जाता हूँ, कल मिलेंगे ।

मोरपाल – ठीक है, बाई ।

(दोनों अलग – अलग रास्ते से आगे बढ जाते हैं ।)

अथवा

टिप्पणी – मोरपाल जैसे बच्चों के बचपन की दुर्दशा

गरीब परिवार में जन्म लेने के कारम मोरपाल जैसे बच्चों को बहुत कठिनाइयाँ झेलना पडा था । पढे-लिखे न होने से घरवाले तो बच्चों को स्कूल भेजने के बदले काम पर भेजने को अधिक पसंद करते हैं । पढाई में आगे होने पर भी बच्चे शिक्षा से अलग होकर जीने में विवश थे । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते, उन्हें माँ-बाप के साथ पूरा समय खेत मजूरी करने जाना पडता है । गरीबी के कारण ठीक से भोजन तथा अच्छे कपडे भी उन्हें नज़ीब नहीं थे । गाँव में अपने घर के पास कोई स्कूल न होने से वह रोज़ घर से स्कूल तक पंद्रह किलोमीटर साईकिल चलाकर आता था । स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम काज से बचकर एक बच्चा बना रह सकता और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए मोरपाल और उसके सहपाठी बिना नागा रोज़ स्कूल चले आते थे । स्कूल को लेकर उनका प्रेम इतना गहरा होने से रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म थी, इस कारण वही यूनीफॉर्म पहनकर सब कहीं जाता था । स्कूल जाने को बहुत पसंद करने पर भी कभी-कभी पढाई छोडकर पूरा समय काम पर लग जाने की गराब बच्चों की विवशता यहाँ हम देख सकते हैं ।

सूचना – 10

1. तुमको घोडे पर चढना आता है ।

2. **वार्तालाप को आगे बढाएँ ।**

मोरपाल – यार, तुम कल कहाँ गए थे ?

मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?

मोरपाल – तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?

मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।

मोरपाल – पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।

मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?

मोरपाल – स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है ।

मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?

मोरपाल – हाँ लाया । तुम राजमा भी लाया है न ?

मिहिर - नहीं भूला । अब हम क्लास में जाएँ । घंटी बजा होगा । क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है ।

मोरपाल – ठीक है । जल्दी चलो ।

अथवा

सही मिलान

मोरपाल आज भी	- खेत मजूरी करता है ।
फिल्म में कलाम को	- पसंद के स्कूल जाने का मौका मिलता है ।
कलाम की कहानी	- सौ में से एक कहानी है ।
मोरपाल का स्कूल	- आठवीं के बाद छूट जाता है ।

SREEJITH R KOVOOR VARKALA SCRIBES ph 9567224545

सूचना – 11

1. आएगी ।
2. उसे स्कूल जाना नहीं पडेगा ।
3. स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था ।

4. **मोरपाल की डायरी (वह कल से स्कूल नहीं जा पाने से दुखी होकर)**

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज सबेरे पिताजी ने कहा कि कल से स्कूल नहीं जाएँ । मेरा परिवार बहुत गरीब है । इसलिए कल से पिताजी के साथ खेत-मजूरी करने जाना है । अब मैं आठवीं कक्षा में हूँ । मुझे आगे पढने का शौक है । मैं स्कूल जाए बिना मिहिर को कैसे मिलूँगा ? मेरे दोस्तो में सबसे जिगरी दोस्त मिहिर ही है । उससे राजमा-चावल कैसे खाऊँगा ? मेरे जैसे मिहिर भी दुखी होगा । मुझे सिर्फ एक जोडा नीली-खाकी यूनीफॉर्म ही थी । तब भी सारे दिन स्कूल जाना पसंद था । आगे मैं क्या करूँ ?

अथवा

टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल । वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था । वह लेखक के पास ही बैठता था । खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था । लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था । अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था । घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था । स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी,इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था । वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है ।

सूचना – 12

1. कोई + का = किसीका
2. क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी।
3. **मिहिर का पत्र**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मैंने अपने मित्र मोरपाल के बारे में पहले तुमसे बताया था न ? उसे मैंने हमेशा स्कूल यूनिफॉर्म पहने ही देखा था । लेकिन मोहल्ले की किसी शादी में उसे वही स्कूल यूनिफॉर्म पहने हुए देखा तो सचमुच मैं हैरान रह गया । कोई शादी में ऐसा आता है क्या ? हम तो शादी में बेहतर कपडे ही पहनते हैं न ? सोचा कि उससे इसके बारे में पूछ ले । बाद में ही मुझे पता चला कि उसके पास एकमात्र कमीज पैंट का नया जोडा वह नीली - खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी । इसलिए वह हमेशा यही पहनकर घूमता था। कितनी बुरी हालत है उसकी । अगले दिन ही मैं अपने पास के कुछ नए कपडे उसको दूँगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

HSSLiVE.IN

सूचना – 13

1. घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी
2. घर की गरीबी के कारण आठवीं के बाद उसका स्कूल छूट जाता है ।
3. **पटकथा (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)**

स्थान - स्कूल का रास्ता ।
समय - सुबह के10 बजे ।
पात्र - 1. मिहिर, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
2. मोरपाल, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
घटना का विवरण - स्कूल से वापस जाने पर दोनों आपस में बातें करते हैं ।

संवाद -

मिहिर - नमस्ते मोरपाल ।
मोरपाल - नमस्ते ।
मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे । क्या बात है ?
मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है । कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा ।
मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?
मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर ।
मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?
मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा ।
मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?
मोरपाल - पसंद है । लेकिन मैं मज़बूर हूँ ।
मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है । कल से तुम भी नहीं हो तो ...
मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो । हम फिर मिलेंगे ।
मिहिर - ठीक है मोरपाल ।

(दोनों अपने-अपने घर की ओर जाते हैं ।)

अथवा

मिहिर का पत्र (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ । परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ ।

मेरी कक्षा में एक मित्र है, उसका नाम मोरपाल है । सारे दिन मोरपाल मेरेलिए छाछ लाता है । बदले में मैंने उसको राजमा-चावल देता हूँ । आज मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है । मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है । मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा । मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था । कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम । छोटे भाई को मेरा प्यार । तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

सूचना – 14

1. अनुकरण करना
2. **पोस्टर (समारोह) – विश्व छात्र दिवस**

सरकारी हायर सेकेंटरी स्कूल, कोल्लम
विश्व छात्र दिवस समारोह
भूतपूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम का नवासीवाँ जन्मदिन
आयोजन – हिंदी मंच

2020 अक्तूबर 15, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – पी टी ए प्रसिडेंट
अध्यक्ष – प्रधानाध्यापिका
मुख्य भाषण – हिन्दी अध्यापक

* विविध प्रधियोगिताएँ
* प्रश्नोत्तरी
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

भाग लें... लाभ उठाएँ...
सबका स्वागत

अथवा

कलाम की डायरी

तारीख: ……………….

आज मेरे मन में एक विचार आया। वह मैं कभी साकार करूँगा। मुझे सब छोटू बुलाते हैं। आज से मेरा नाम कलाम है। टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ. कलाम का भाषण मैंने देखा। कितना प्रभावकारी शब्द है उनका। भविष्य में मैं भी डॉ. कलाम जैसा बनूँगा। उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा। फिर उनसे मिलूँगा। इसकेलिए पढना ज़रूरी है। मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा।

सूचना – 15

1. स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना
2. कलाम की चिट्ठी राष्ट्रपति तक पहुँचेगी।
3. **कलाम की डायरी (मंज़िल की पूर्ति)**

तारीख: ………………………..

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन । मेरा सपना साकार हो गया । स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया । स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ-साथ चले। क्लास में उसके साथ बैठकर पढा। स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई । याद आया,चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था । लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था। चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था । लेकिन कलाम जी से मिल न सका । पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी। सब सपने जैसे लग रहे हैं आज ! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं। अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा। अच्छी तरह पढ-लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा।

अथवा

कलाम और रणविजय की दोस्ती पर टिप्पणी

आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का दोस्त था ढाणा के राणा के बेटा रणविजय । कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का। दोनों के बीच घुडसवारी सीखना और पेड पर चढना सिखाने के लेन -देन को लेकर दोस्ती हो जाती है । रणविजय कलाम को अंग्रेज़ी सिखाने में मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । रणविजय के मन में अमीर होने का कोई भाव नहीं था । दोनों अपने संकट तथा आशाएँ आपस में बाँटते थे । दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार भी करते थे । कलाम की किताब और कपडे जला देने पर रणविजय उसको अपनी किताब और कपडे देता है । कलाम की मदद से रणविजय स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीतता है । अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाए जाने पर दोस्त को बचाने केलिए कलाम उस आरोप को सह लेता है । कलाम अपनी दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला था । अंत में रणविजय की मदद से कलाम उसके साथ अपने पसंद के स्कूल जाकर पढने में सफल बनता है । इस तरह हम उनमें दो अच्छे दोस्त को हम देख सकते हैं।

सूचना – 16

1. वह कलाम जैसा बनना चाहता है।
2. चाय की दुकान में
3. **कलाम का पत्र**

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ।

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे। कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया। पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा। मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया। इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

अथवा

सही मिलान

बाँछें खिल जाना - प्रसन्न हो जाना
दिल जीत लेना - आकर्षित करना
वाहवाही करना - प्रशंसा करना
अदला-बदली करना – विनिमय करना

सूचना – 17

1. विदेशी टूरिस्ट की बोली झट-से सीख जाता है। इस प्रकार वह लूसी मैडम का दिल जीत लेता है।
2. देगी।
3. **कलाम के चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी**

नील माधव पांडा की आई एम कलाम फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम । चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था-स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना । एक अलग जीवन,बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था । वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी । घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है । दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है । राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है ।

सूचना – 18

1. ढाणी के राणा सा का बेटा
2. वह + से = उससे
3. कलाम बोली **झट से** सीख जाता है।
   कलाम **विदेशी** बोली झट से सीख जाता है।
4. **पटकथा**

स्थान - राणा सा के घर में, रणविजय के कमरे में।
समय - शाम के 6 बजे।
पात्र - दोनों 10 साल के, कुर्ता और आधा पतलून पहने हैं।
घटना का विवरण - रणविजय के कमरे में आने पर कलाम वहाँ बहुत सारे पुस्तक देखते हैं। वह इसके बारे में उससे पूछता है।

संवाद –

कलाम - इतनी सारी किताबें ! किसकी हैं ?
रणविजय – मेरा ही है।
कलाम - क्या तुम इसे पढते हो ?
रणविजय – थोडा, मुझे हिंदी की कविता याद नहीं आती। मेरी हिंदी थोडी कमज़ोर है।
कलाम - ठीक है। मैं तुम्हें हिंदी सिखाऊँगा, क्या तुम मुझे अंग्रेज़ी सिखाओगे ?
रणविजय – ज़रूर सिखाऊँगा। तुम मुझे पेड पर चढना सिखाओगे ?
कलाम - हाँ, तुम मुझे घुडसवारी सिखाओगे ?
रणविजय – हाँ, ज़रूर।
कलाम - ठीक है। आज से हम अच्छे दोस्त होंगे।
रणविजय – ठीक है यार। (कलाम वहाँ से अपना घर जाता है। रणविजय खिडकी से उसे देखता है।)

अथवा

कलाम का पत्र

स्थान : ……………….
तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ।

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे। कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया। पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा। मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया। इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

सूचना – 19

1. कलाम जैसा बनना
2. छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है। उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है। वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है। इसलिए भाटी सा उसकी कलाकारी की प्रशंसा करता है।

3. **समाचार (रपट) –** **' आई एम कलाम ' सिनेमा की प्रदर्शन- सारे जगहों में हाउस फुल !**

स्थान : .... आज राष्ट्र के अनेक थिएटरों में ' आई एम कलाम ' नामक फिल्म की प्रदर्शनी हुई। सुबह पाँच बजे से लेकर रात तक छह शो हुए हैं। नील माधव पांडे की यह फिल्म सूपर हिट है, यह खबर सारी जगहों से मिलती है। सभी थिएटरों के आगे लोगों की लंबी कतार दिख पडा। अनेक लोग टिकट न मिलने से निराश होकर लौट रहे थे। उन्होंने निश्चय किया है कि कल बडे सबेरे ही आएँगे और ज़रूर सिनेमा देखेंगे। यह फिल्म कम-से-कम दो सौ दिन यहाँ होगा। एक महीने तक की टिकट अभी बुक किया है।

अथवा

टिप्पणी – गरीबी

गरीबी संसार के सबसे विकट समस्याओं में से एक है। गरीबी किसी भी व्यक्ति या इंसान केलिए अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है। गरीबी के कारण लोग जीवन के आधारभूत ज़रूरतों जैसे रोज़ी रोटी, स्वच्छ जल, साफ कपडे, घर, उचित शिक्षा, दवाइयाँ आदि को भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं। देश में ज़्यादातर लोग ठीक ढंग से दो वक्त की रोटी नहीं हासिल कर सकते हैं, वो सडक के किनारे सोते हैं और गंदे कपडे पहनते हैं। गरीबी का मुख्य कारण बढती जनसंख्या, कमज़ोर कृषि, भ्रष्टाचार, पुरानी प्रथाएँ, बेरोज़गारी, अशिक्षा, संक्रामक रोग आदि हैं। गरीबी की वजह से ही कोई छोटा बच्चा अपने परिवार की आर्थिक मदद केलिए स्कूल जाने के बजाय कम मजदूरी पर काम करने केलिए मजबूर हो जाते हैं। गरीबी समाज व देश की विकास केलिए खतरा उत्पन्न करती है। इसलिए गरीबी को जड से उखाडने केलिए हरेक व्यक्ति का एक-जुट होना बहुत आवश्यक है।

HSSLiVE.IN

सूचना – 20

1. परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है।
2. पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है।
3. **पटकथा**

स्थान - घर के अंदर।

समय - शाम 5 बजे।

पात्र - कलाम और रणविजय। (दोनों 10 साल के,कुर्ता और निकर पहने हैं।)

घटना का विवरण - रणविजय के चेहरे पर उदास देखकर कलाम उससे कारण पूछता है। रणविजय उसका जवाब देने लगता है।

संवाद –

कलाम - अरे कुँवर, तुझे चोट कैसे लगी ?

रणविजय - घबराइए मत, खेल-कूद में चोट तो लग जाती है। ऊपर आइए।

कलाम - हड्डी भी टूट गयी ?

रणविजय - हड्डी नहीं, ट्रॉफी जीतने का सपना टूट गया।

कलाम - समझा नहीं। लगता है तुमको कोई परेशानी है।

रणविजय - हाँ यार। कल स्कूल में एक भाषण देना है।

कलाम - उसमें परेशानी की बात है ?

रणविजय - भाषण हिंदी में है।

कलाम - तो क्या ?

रणविजय - मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं, लिखूँगा कैसे ?

कलाम - फिकर मत करो। मेरी हिंदी तुमसे बढकर अच्छी है न ? मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो।

रणविजय - तो मैं उसे अच्छी तरह प्रस्तुत करूगा।

कलाम - आज ही लिख दूँगा। तुम ज़रूर ट्रॉफी जीतोगे।

रणविजय - ठीक है यार। जल्दी आओ।

(कलाम दोस्त केलिए भषण तैयार करने केलिए अपना घर जाता है।)

अथवा

टिप्पणी - रणविजय की चरित्रगत विशेषताएँ

नील माधव पांडा की आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का साथी था रणविजय। वह ढाणी के राणा का बेटा था। अमीर होने की कोई भाव उसमें नहीं था। परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करने से उसे स्कूल जाना पसंद नहीं था। पेड पर चढना सीखना और घुडसवारी सिखाने का लेन-देन को लेकर कलाम के साथ उसकी दोस्ती होती है। वह हिंदी में थोडा पीछा है। कलाम की सहायता से वह स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार का ट्रॉफी जीत लेता है। कलाम की किताबों को जला दिया जाने पर वह उसे अपनी किताबें देता है। वह कलाम को अंग्रेज़ी सीखने में मदद भी करता है। इस प्रकार हम उसमें अच्छे मित्र को देख पाते हैं।

सूचना – 21

1. हम स्कूल जाया करते थे ।
2. उसकी हिंदी अच्छी नहीं है ।
3. **वार्तालाप – कलाम और रणविजय के बीच**

कलाम - अरे कुँवर, तुझे चोट कैसे लगी ?
रणविजय - घबराइए मत, खेल-कूद में चोट तो लग जाती है । ऊपर आइए ।
कलाम - हड्डी भी टूट गयी ?
रणविजय - हड्डी नहीं, ट्रॉफी जीतने का सपना टूट गया ।
कलाम - समझा नहीं । लगता है तुमको कोई परेशानी है ।
रणविजय - हाँ यार । कल स्कूल में एक भाषण देना है ।
कलाम - उसमें परेशानी की बात है ?
रणविजय - भाषण हिंदी में है ।
कलाम - तो क्या ?
रणविजय - मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं, लिखूँगा कैसे ?
कलाम - फिकर मत करो । मेरी हिंदी तुमसे बढकर अच्छी है न ? मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो ।
रणविजय - तो मैं उसे अच्छी तरह प्रस्तुत करूगा ।
कलाम - आज ही लिख दूँगा । तुम ज़रूर ट्रॉफी जीतोगे ।
रणविजय - ठीक है यार । जल्दी आओ ।

अथवा

रपट

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : ------------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था। इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया । ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

सूचना – 22

1. वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से ।
2. मंज़िल प्राप्त होती है ।
3. **मित्र के नाम रणविजय का पत्र**

स्थान : ……………….
तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुमको मेरा दोस्त कलाम को याद है न ? आज उसके हाथों से लिखे भाषण से मुझे स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला । ट्रॉफी लेकर उसे दिखाने आया तो पता चला कि वह चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली गया है । मैं दुख सह न पाया । सच में मुझे बचाने वह चोरी का आरोप सह लिया था । दोस्ती को इतना ऊँचा स्थान देनेवाला उसे मैं कैसे खोऊँ ? मेरे पापा से सच बताने पर उन्होंने मुझे कलाम को ढूँढकर लाने की अनुमति दे दी । कल मैं उसकी तलाश में दिल्ली जाऊँगा ।

पढाई कैसे चल रही है ? वहाँ तुम्हें कलाम जैसा कोई मित्र है क्या ? तुम्हारे घरवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

अथवा

टिप्पणी – कलाम और रणविजय के जीवन के अंतरों पर

कलाम गरीब घर का लडका था । पर उसका मित्र रणविजय तो राज परिवार का यानी ढाणा के राणा का बेटा था । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था । रणविजय गुड सवारी जानता था तो कलाम पेड पर चढना जानता था । कलाम को अच्छी तरह हिंदी आती थी तो रणविजय को अंग्रेज़ी । कलाम को पहनने केलिए अच्छे कपडे तथा पढने केलिए पुस्तकें नहीं थे तो रणविजय के पास पहनने केलिए महंगे कपडे तथा पढने केलिए अनेक पुस्तकें थे । रणविजय सुख-सुविधाओं पर रहते समय कलाम अभावों में जीवन बिता रहा था । कलाम सीखने में तेज़ हो तो रणविजय कुछ आसली था ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA SCRT45 ph 9567224545

सूचना – 23

1. मिलना होगा।
2. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है। रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सजा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है। अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं।
3. **रणविजय की डायरी**

तारीख: ……………….

आज कलाम की मदद से मुझे भाषण में प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला। सभी लोगों ने मेरी तारीफ की। लेकिन मेरे मन में उसका चेहरा था। मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी। इस भाषण के बारे में बताते वक्त उसने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था। वह भाषण कितना आकर्षक था। दूसरों की खुशी चाहनेवाला उसका मन कितना बडा है ! पर क्या करूँ ? ट्रॉफी लेकर उसे दिखाने आया तो पता चला कि वह चोरी के आरोप में गाँव छोडकर दिल्ली गया है। मैं दुख सह न पाया। सच में मुझे बचाने केलिए उसने वह चोरी का आरोप सह लिया था। दोस्ती को इतना ऊँचा स्थान देनेवाले मित्र को मैं कैसे खोऊँ ? मेरे पापा से सच बताने पर उन्होंने कलाम को ढूँढकर लाने की अनुमति दे दी। कल मैं उसकी तलाश में दिल्ली जाऊँगा। वापस आकर उसे भी मेरे स्कूल में भर्ती कराना है। ऐसे हम एक साथ स्कूल बस में स्कूल जाएँगे। वह कितना खुश होगा ! उसकी मंज़िल की पूर्ति करना अब मेरा ही दायित्व है।

सूचना – 24

1. उसके मन में दोस्ती का ऊँचा स्थान है।
2. **कलाम के नाम रणविजय का पत्र**

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ।

तुम्हारी मदद से आज मुझे भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला। सभी लोगों ने मेरी तारीफ की। लेकिन मेरे मन में तुम्हारा चेहरा था। मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी। इस भाषण के बारे में बताते वक्त तुमने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था। वह भाषण कितना आकर्षक था। दूसरों की खुशी चाहनेवाला तेरा मन कितना बडा है कलाम। मैं तुम्हारा आभारी हूँ। एक दिन तुमसे मिलने आऊँगा।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SGRHS PK 9562102545

पाठ - 5 सबसे बडा शो मैन (जीवनी) कार्यपत्रिका - उत्तर सूचिका

सूचना – 1

1. माँ की आवाज़ फट गई ।
2. अपनी मासूमियत से मज़हूर गीत जैक जोन्स जाकर
3. **अभद्र** शोर ने माँ को हटने को मज़बूर कर दिया ।
   अभद्र शोर ने माँ को **स्टेज से** हटने को मज़बूर कर दिया ।
4. **वार्तालाप – माँ और दर्शक**

दर्शक - क्या, यह आपका बेटा है ?

माँ - हाँ, क्या आपको उसको शो पसंद आए ?

दर्शक - ज़रूर मैडम । उसने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया ।

माँ - भगवान की जय हो । अब बेटे के बारे में सोचकर मुझे बहुत गर्व हो रहा है ।

दर्शक - क्या नाम है उसका ?

माँ - चार्ली ।

दर्शक - कितने साल का है ?

माँ - पाँच ।

दर्शक - हे भगवान, इतने छोटे उम्र में ? वह तो ज़रूर होनहार बच्चा है । आगे भी उसे शो केलिए भेजना ।

माँ - मैं ज़रूर कोशिश करूँगी ।

दर्शक - आपके शब्द को क्या हुआ था ?

माँ - पता नहीं क्या हुआ ? गले में दर्द हो रहा है । अस्पताल जाकर देखना है । अब मुझे जाना है ।

दर्शक - ठीक है, आप जाइए ।

सूचना – 2

1. गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई ।
2. माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाना ।
3. सही मिलान करके लिखें ।

स्टेज पर गाते वक्त	माँ की आवाज़ खराब हो गई ।
लोग शोर मचाने से	माँ स्टेज से हट गई ।
लोगों ने सोचा	माइक में कुछ गडबडी हो गई है ।
चार्ली परदे के पीछे खडे होकर	यह तमाशा देख रहा था ।

सूचना – 3

1. गाते समय चार्ली की माँ की आवाज़ खराब हो जाने से
2. तू + की = तेरी
3. **पटकथा**

स्थान - एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे ।

समय - रात के 7 बजे ।

पात्र - मैनेजर, करीब 50 साल का, पतलून और कमीज़ पहना है ।
चार्ली की माँ, करीब 45 साल की, चुडीदार पहनी है ।

घटना का विवरण - गाते समय गले की खराबी से मंच के पीछे आई माँ से मैनेजर बातें करने लगता है । दर्शक शोर मचा रहे हैं ।

संवाद –

मैनेजर - हेन्नाजी, देखिए न, दर्शक शोर मचा रहे हैं । उनको किसी न किसी तरह शामत कराना होगा ।

माँ - मैं क्या करूँ, गा नहीं पा रही हूँ । मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गयी है ।

मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे । आपका बेटा है न चार्ली, वह छोटा है लेकिन किसी तरह इन दर्शकों को शांत कराए तो ...

माँ - नहीं जी । पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा । मैं नहीं मानूँगी ।

मैनेजर - हमारे सामने और कोई चारा नहीं न । इसलिए बता रहा था । क्योंकि मैंने आपके बेटे को आपके मित्रों के सामने अभिनय करते हुए और गीत गाते हुए देखा था । मुझे लगता है कि इस हालत में उसकी सहायता लेना ठीक होगा ।

माँ - लेकिन मैं कैसे बताऊँ, इस छोटे बच्चे को स्टेज पर भेजने के लिए । मुझे डर लगता है ।

मैनेजर - हम सब तो हैं न । उसे अकेले छोडकर हम नहीं जा रहे हैं । हम उसको स्टेज पर छोडेंगे ।

माँ - मैं क्या बताऊँ सर । और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी ।

(मैनेजर चार्ली को साथ लेकर मंच पर जाता है । माँ परदे के पीछे से यह देखती है ।)

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRHS Ph 9567224545

HSSLiVE.IN

सूचना – 4

1. मैनेजर ने चार्ली का अभिनय देखा था।
2. माँ सोचने लगी।
3. **पटकथा (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है।)**

स्थान – एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे।

समय – रात के 7 बजे।

पात्र – चार्ली, पाँच साल का बच्चा, पतलून और कमीज़ पहना है।
माँ, करीब 45 साल की औरत, चुडीदार पहनी है।

घटना का विवरण – मैनेजर की ज़िद के कारण माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है।

संवाद –

माँ – चार्ली बेटा ... ।

चार्ली – क्या है माँ ?

माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं।

चार्ली – इसलिए क्या ?

माँ – तुम स्टेज पर आकर कुछ करों ... ।

चार्ली – मैं क्या करूँ ?

माँ – तुमने पिछले दिन मेरी सहेलियों के सामने गाना गाया है न ? वही यहाँ करों ... ।

चार्ली – वह आपकी सहेलियों के सामने है न ... ? वे मेरे परिचित हैं। लेकिन अपरिचित लोगों के सामने मैं कैसे गाऊँ ... ?

माँ – कुछ नहीं होगा बेटा ... जल्दी मेरे साथ आओ और मैं कहने के जैसे करो।

चार्ली – ठीक है माँ।

(माँ उसे मैनेजर के पास लाती है।)

अथवा

टिप्पणी - चरित्रगत विशेषताएँ (चार्ली का माँ)

हेन्ना लंदन की प्रसिद्ध गायिका है। वह अपना बेटा चार्ली को बहुत प्यार करती है। स्टेज शो केलिए जाते समय बेटे को अपने साथ ले जाती है। एक दिन गाना गाते समय उसकी आवाज़ फुसफुसाहट में तब्दील हो जाती है। उसको स्टेज से हटना पडता है। मैनेजर उससे अपने बेटे चार्ली को स्टेज पर ले जाने को कहता है। चार्ली स्टेज पर जाकर क्या करेगा, यह सोचकर वह अपनी आशंका प्रकट करती है। अंत में चार्ली को स्टेज पर भेजने को मज़बूर होती है। बेटे का करतब देखकर वह खुश होती है। अंत में चार्ली के लिए स्टेज छोडती है। वह चार्ली की भावी पर खुश है।

सूचना – 5

1. ज़िद करना
2. मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था। इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा।
3. **मैनेजर की डायरी**

तारीख: ....   आज मेरेलिए कैसा दिन था,बता नहीं सकता। गायिका हेन्ना को गाते वक्त गले की खराबी के कारण स्टेज छोडना पडा उसकी जगह उसके पाँच साल के बच्चा चार्ली को स्टेज पर लाया गया। उसने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर,बातचीत करके,नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराया। माँ के हटने से मैं डर गया था कि लोगों को कैसे शांत करेगा। पर चार्ली ने मेरी रक्षा की। आज चार्ली एक शो मैन बन गया है। आगे भी वह शो में कमाल करेगा।

सूचना – 6

1. चार्ली को स्टेज पर लाने के मैनेजर की ज़िद।
2. केवल पाँच साल का बच्चा चिल्लाते लोगों को कैसे सामना करेगा - यह सोचकर माँ डर गई।
3. आवाज़ खराब होने पर लोग चिल्लाने लगे तो माँ स्टेज से हट गई। तब मैनेजर ने चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद की। इसलिए उसको स्टेज पर जाना पडा।
4. **वार्तालाप को आगे बढाएँ।**

मैनेजर - हेन्ना जी... आपको क्या हो गया...?

माँ - जी... नहीं मालूम...मेरी आवाज़ फट जाती है।

मैनेजर - आपने गाना क्यों छोड दिया...?

माँ - माफ कीजिए... मैं गा नहीं सकती।

मैनेजर - अब क्या करें ? लोग बहुत शोर मचा रहे हैं।

माँ - आप ही बताइए, मुझे क्या करना है ?

मैनेजर - चार्ली को स्टेज पर भेज दूँ ?

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA SCRT45 Ph 9567224545

माँ - चार्ली को ? नहीं... वह तो छोटा बच्चा है न ?

मैनेजर – तो क्या ? मैंने उसे आपके कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा है ।

माँ – लेकिन वह तो कमरे के अंदर था । इस उग्र भीड को वह कैसे संभालेगा ।

मैनेजर – आप चिंता न कीजिए,चार्ली एक होनहार बच्चा है न ? वह ज़रूर इस भीड को शांत करेगा ।

माँ – तो ठीक है,आपकी मर्ज़ी ।

सूचना – 7

1. मैनेजर ने
2. पैसा बटोरने के बाद ही गाऊँगा ।
3. आप ये पैसे बटोरेंगे ।
4. **वार्तालाप – मैनेजर और पत्नी**

पत्नी - क्या हुआ ? आज बहुत खुश दिखते हैं ।

मैनेजर - हाँ, बहुत खुश हूँ ।

पत्नी - बताइए बात क्या है ?

मैनेजर - आज गायिका हेन्ना की आवाज़ खराब हो गई थी । उसकी जगह बेटे को मैं स्टेज पर ले गया ।

पत्नी - बेटे को ? वह तो पाँच साल का है न ? उसने क्या किया ?

मैनेजर - पहले मुझे भी डर तो था । पर उसने तो कमाल ही कर दिया । कुछ समय से वह अपनी मासूमियत से शोर मचाती भीड को अपने वश में लाया ।

पत्नी - आप क्या क्या कर रहे हो ... उसने ?

मैनेजर - मैं ठीक कहता हूँ । चार्ली की शो के बारे में जानकर बहुत लोग उसके शो केलिए अब फोन कर रहे हैं ।

पत्नी - यह तो अच्छी बात हुई । माँ नहीं तो बेटा आपकी मदद की ।

मैनेजर – तुमने सही कहा । खाना लो, बहुत भूख लगती है ।

पत्नी - मैं खाना लाती हूँ । आप नहाकर आइए ।

अथवा

पोस्टर (संगोष्ठी) – चार्ली चैप्लिन, कालजयी कलाकार

सरकारी जी.एच.एस.एस, कोल्लम
संगोष्ठी
विषय – **चार्ली चैप्लिन, कालजयी कलाकार**
आयोजन – हिंदी मंच
2018 अप्रैल 16, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में
उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल
प्रस्तुति - हिंदी अध्यापक
भाग लें... लाभ उठाएँ...
सबका स्वागत

सूचना – 8

1. जैक जोन्स
2. मैनेजर । शोर मचाती भीड को शांत कराने ।
3. चार्ली ने **मशहूर** गीत गाना शुरू किया ।
   चार्ली ने मशहूर गीत **जैक जोन्स** गाना शुरू किया ।
4. वार्तालाप – माँ और मैनेजर

माँ – चार्ली बेटा ... ।

चार्ली – क्या है माँ ?

माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं ।

चार्ली – इसलिए क्या ?

माँ – तुम स्टेज पर आकर कुछ करों ... ।

चार्ली – मैं क्या करूँ ?

माँ – तुमने पिछले दिन मेरी सहेलियों के सामने गाना गाया है न ? वही यहाँ करों ... ।

चार्ली – वह आपकी सहेलियों के सामने है न ... ? वे मेरे परिचित हैं । लेकिन अपरिचित लोगों के सामने मैं कैसे गाऊँ ... ?

माँ – कुछ नहीं होगा बेटा ... जल्दी मेरे साथ आओ और मैं कहने के जैसे करो ।

चार्ली – ठीक है माँ ।

सूचना – 9

1. बदल जाना
2. स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो जाएगी।
3. **चार्ली की माँ का पत्र**

स्थान : ……………….

प्रिय सहेली,

तारीख : ……………….

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रही हूँ । कल मेरा एक म्यूज़िक प्रोग्राम था । क्या कहूँ ? प्रोग्राम शुरू ही हुआ था । मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग चिल्लाने लगे । मैं स्टेज से हट गई । मैं इस विचार में था कि क्या करूँ ? तभी मैनेजर ने चार्ली को स्टेज पर ले गया । उसने कमाल कर दिया । लोग खुश हुए । उसे बहुत पैसे भी दिए । इस प्रकार मेरे मान की भी रक्षा हुई । मेरे लाडले को लोग एक शो मैन मान लिया है । लगता है आगे उसका समय रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

अथवा

पोस्टर - चार्ली चैप्लिन के फिल्मों का प्रदर्शन

सरकारी हाईस्कूल,कोल्लम
फिल्मोत्सव 2020
हिंदी समिति के नेतृत्व में
चार्ली चैप्लिन के फिल्मों का प्रदर्शन
2020 जनवरी 26 रविवार को
सुबह 10 बजे से स्कूल सभाभवन में
उद्घाटन – एम.एल.ए
प्रदर्शन के फिल्में: 1. दि सरकस (सुबह 11 बजे)
2. मॉडेन टाईमस (दोपहर 2 बजे)
3. सिटि लाईटस (शाम 5 बजे)
आइए ... देखिए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत
विश्व कलाकार चैप्लिन के फिल्मों को देखने का अवसर त्याग न दें ।

सूचना – 10

1. पैसा बटोरने केलिए
2. स्टेज से हटना पडेगा।
3. **चार्ली की डायरी**

तारीख: ……………….

आज मेरेलिए कैसा दिन था,बता नहीं सकता । माँ के आवाज़ खराब होने से मुझे पहली बार स्टेज पर जाना पडा । लोग बहुत शोर मचा रहे थे । पहले मैं बहुत डर गया था । फिर भी मैं अपनी मासूमियत से मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया । गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पैसों की बौछार हो लगी । फिर मैंने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर,बातचीत करके,नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । लोगों ने मुझे एक शो मैन की तरह मान लिया था । मेरा यह पहला शो हमेशा यादों में रहेगा ।

सूचना – 11

1. उसने पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की ।
2. आयी /आयीं
3. चार्ली गीत गाते समय स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । गाना रोककर उसने अपने बाल सहज भोलापन से घोषणा की कि अब पैसे बटोरकर ही मैं आगे गाऊँगा। इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।

सूचना – 12

1. लोग तालियाँ बजाने लगे ।
2. दर्शकों ने **देर तक** खडे होकर तालियाँ बजाईं ।
   दर्शकों ने देर तक खडे होकर **खुशी से** तालियाँ बजाईं ।

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCRT45

सूचना – 13

1. गीत चतुर्वेदी
2. पैसों की वर्षा होने लगी
3. **सही मिलान**

माँ की आवाज़ खराब हो गयी	- माँ स्टेज से हट गई।
चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद की	- मैनेजर ने चार्ली का अभिनय देखा था।
माँ बहुत डर गई	- चार्ली उग्र भीड को झेल पाएगा।
मैनेजर चार्ली को स्टेज पर ले गया	- बचाव के कुछ शब्द कह अकेला छोड आया।

सूचना – 14

1. क्योंकि उसे लगा कि मैनेजर वह पैसे खुद ले जाना चाहता है।
2. बच्ची मैदान में खेलने लगी।
3. चार्ली का गाना सुनकर लोग पैसे फेंकने लगे तो वह गाना रोककर पैसा बटोरने लगा। मैनेजर पैसे बटोरकर बैकस्टेज जाने लगे तो शिकायत करते हुए उनके पीछे चला। वे पैसे की पोटली माँ को देने तक चार्ली वापस नहीं आया। उसके इन व्यवहारों ने जनता में गुदगुदी फैला दी। वे उसकी मासूमियत, प्रस्तुती और प्रवृत्तियों को स्वाकार कर रहे थे।

4. टिप्पणी - चरित्रगत विशेषताएँ (चार्ली)

चार्ली मशहूर गायिका हेन्ना का बेटा है। वह पाँच वर्ष का है। सारे दिन माँ स्टेज शो केलिए जाते समय वह भी अपनी माँ के साथ जाता है। स्टेज के पीछे खडा होकर वह माँ का गाना सुनता है। एक दिन लंदन के प्रसिडेंसी हॉल में गाना गाते समय माँ की आवाज़ फुसफुसाहट में तब्दील हो जाती है। यह देखकर वह स्टेज के पीछे खडा होकर हँसता है। मैनेजर के आदेशानुसार माँ उसको स्टेज पर ले जाती है। दर्शकों के सामने खडा होकर मशहूर गायक जैक जोन्स का गाना गाता है, नृत्य करता है और अपनी माँ सहित अनेक गायकों की नकल उतारता है। वह दर्शकों की प्रशंसा का पात्र बनता है। दर्शकों से विख्यात होने की भविष्यवाणी भी मिलती है।

सूचना – 15

1. चार्ली की मासूमियत से प्रभावित था।
2. चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी। विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा। गले का दर्द बढ रही थी। उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था। इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा।
3. **रपट**

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : .... लंदन के प्रसिद्ध थिएडर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया। गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया। चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे। बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा। इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया। इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की,नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी। दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया। लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था।

सूचना – 16

1. गाने लगा।
2. पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर,बातचीत करके,नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया। उसने जनता में गुदगुदी फैला दी। इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया।
3. **वार्तालाप को आगे बढाएँ।**

माँ - आज तूने कमाल कर दिया बेटे !

चार्ली – लेकिन मैं खुशी नहीं हूँ अम्मा।

माँ - क्या हुआ बेटा ?

चार्ली – आप पर लोगों ने...

माँ - छोड दो बेटा,गाना बीच में रुक गया न ?

चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?

माँ - पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती...

चार्ली – ऐसा न कहो माँ।

माँ - दर्शकों ने तुझे मान लिया है,इस पर मैं खुश हूँ।

चार्ली – भूल जाओ माँ,सब ठीक हो जाएँगे।

सूचना – 17

1. प्रशंसा करना
2. लोगों ने स्टेज पर जमकर पैसे बरसे । माँ जब उसे लेने आई तो दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं । कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर उसके छोटे बच्चे की तारीफ की ।
3. **कई** लोगों ने बच्चे की तारीफ की ।
   कई लोगों ने **छोटे** बच्चे की तारीफ की ।

सूचना – 18

1. जन्म ले लिया
2. तारीफ
3. **पटकथा**

स्थान - एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे ।
समय - रात के 7 बजे ।
पात्र - चार्ली, पाँच साल का बच्चा, पतलून और कमीज़ पहना है ।
माँ, करीब 45 साल की औरत, चुडीदार पहनी है ।
घटना का विवरण - चार्ली अपनी शो खतम करके आने पर माँ के पास आता है । वह माँ से बातें करने लगता है ।

संवाद –

माँ - आज तूने कमाल कर दिया बेटा !
चार्ली – लेकिन मैं खुशी नहीं हूँ अम्मा।
माँ - क्या हुआ बेटा?
चार्ली – आप पर लोगों ने...
माँ - छोड दो बेटा,गाना बीच में रुक गया न?
चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ?
माँ - पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती...
चार्ली – ऐसा न कहो माँ।
माँ - दर्शकों ने तुझे मान लिया है,इस पर मैं खुश हूँ ।
चार्ली – भूल जाओ माँ,सब ठीक हो जाएँगे।

(दोनों मैनेजर को धन्यवाद करते हुए खुशी के साथ दर्शकों के सामने से गुज़र जाते हैं ।)

सूचना – 19

1. चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।
2. स्त्रियाँ तालियाँ बजाती रहीं ।
3. **पोस्टर – म्यूज़िक प्रोग्राम**

मशहूर गायिका हेन्ना जी की
म्यूज़िक प्रोग्राम
आयोजन – एल. एम.ए क्लब, लंदन

तारीख - 14 फरवरी को
समय - शाम को 6 बजे से 8 बजे तक
स्थान - लंदन के ओल्डरशॉट थिएटर में

प्रवेश टिकट से :
सादा सीट – 50 रॉयल सीट – 100
गायिका के साथ एक रात बिताने अवसर न खोने दें
आइए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत

HSSLiVE.IN

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRJ45 ph 9567224545